TEXT DARK AND LIGHT

TIGHT BINGING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182643

UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University

Call No. H81.08 Accession No. P.G. H.29c5

Author Un 55

Title

This book should be returned on or before the date last marked below.

नैशनल बुक ट्रस्ट की पुस्तक

ऊँचा है भारत का भाल

चीन की चुनौती — भारत का जवाब

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

अप्रैल, १९६३ (वैसाख १८८५)

मूल्य १·५०

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, दिल्ली-६ द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित

दो शब्द

चीनी आक्रमण के कारण हमारे देश में एक अजीब विचार तथा भावना क्रांति हुई। हिमालय की दीवार को चीर कर पहली बार एक शत्रु ने हमारे ऊपर हमला किया। जिस राष्ट्र से हम सदैव मित्रता का व्यवहार रखते थे, उसने अचानक धोखा देकर हमारी भूमि छीनने का प्रयत्न किया।

स्वतंत्रता के बाद देश की रक्षा का सवाल इस बार हमारे सामने पेश हुआ। स्वतंत्रता तभी कायम रह सकती है जब हम सदैव उसकी रक्षा के लिए सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार रहें। यह सत्य व्यावहारिक रूप में हमारे सामने पहली बार आया।

देश में एक जोश व भावना की लहर दौड़ी। सब पक्ष और विचार के लोग देश रक्षा के लिए एक हुए। इस एकता से सिद्ध हुआ कि विदेशी आक्रमण के सामने भारतवासी सब कुछ भुलाने को तैयार हैं।

जनता के हृदय की आवाज कवियों ने भिन्न भिन्न प्रकार से प्रकट की है। इस संकलन में उनमें से कुछ चुनी हुई कविताएं पाठकों के सामने पेश की जा रही हैं। ट्रस्ट की ओर से इस राष्ट्रीय संघर्ष में यह एक तुच्छ भेंट है। आशा है इसका स्वागत होगा और भविष्य के लिए यह राष्ट्र की भावना के प्रदर्शन का एक इतिहास चिन्ह होगा।

३०-४-१९६३ बालकृष्ण केसकर

क्रम सूची

	पृष्ठ
नवजीवन जागा	१
विजय-पर्व	१
—मैथिलीशरण गुप्त	
प्रलय रागिनी	७
गंगा माँग रही है मस्तक जमना माँग रही है सपने	७
हिम शैल सदा ही मेरा है	८
—माखनलाल चतुर्वेदी	
रण-विदा	१३
—महादेवी वर्मा	
तेरे श्वासों में ज्वाला हो, अधरों में मधुमादन	१४
—सुमित्रानन्दन पंत	
ऊँचा है भारत का भाल	१६
—सियारामशरण गुप्त	
लोहे के मर्द	२१
विजय पानी है तुझको चाँद-सूरज पर सितारों पर	२२
जनता जगी हुई है	२३
—रामधारी सिंह 'दिनकर'	
सूर समर करनी करहिं	२५
—हरिवंशराय 'बच्चन'	
नये चीन के नाम	२८
—नरेन्द्र शर्मा	
तप्त लहू की धार बहू चली	३२
—नागार्जुन	
भाग ओ अभागे	३३
—पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'	

हमने दिया है बुद्ध तो, फिर युद्ध भी देंगे हमीं ३४
—गोपाल सिंह 'नेपाली'
प्रयाण-गीत ३७
—सोहनलाल द्विवेदी
समर भूमि में चलो ३८
—भगवतीचरण वर्मा
देवी का वरदान ४०
—विद्यावती 'कोकिल'
हिमालय बना अग्नि का देश ४१
—सुमित्रा कुमारी सिनहा
कोटि कोटि कण्ठ ४२
—राधेश्याम कथावाचक
राष्ट्र को जीवन दान करो ४३
—भवानी प्रसाद तिवारी
फौलाद ढले, फैक्टरियों मे फौलाद ढले ४५
सिपाही का पत्र ४६
—शिवमंगल सिंह 'सुमन'.
हिमालय से ५१
—रामकुमार वर्मा
आज पहली बार ५३
—बालकृष्ण राव
चीनी हमले के विरोध में ५५
हेलिकाप्टर के चालक के प्रति ५५
—केदारनाथ अग्रवाल
भारतीय सैनिकों मे ५७
—कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह
सेना के जवानों से ६२
—'अंचल'
रणभेरी ६४
—अशोक जी

जागा हिन्दुस्तान ६६
—नर्मदेश्वर उपाध्याय
गीत ६६
—भारतभूषण अग्रवाल
पुनरावृत्ति ७१
—रमा सिंह
जागते रहना ७४
—गिरिधर गोपाल
जागरण गीत ७६
—कमला चौधरी
ऐ हमारे देश के प्रहरी महान ! ७८
—'बेढब बनारसी'
कर्त्तव्य की पुकार ८०
—गोपाल प्रसाद व्यास
क्रांति गीत ८२
—श्रीकृष्णदास
सरस्वती-पुत्रों से ८४
—क्षेमचन्द्र सुमन
थाम लो सँभालकर देश की मशाल को ८६
—रामावतार त्यागी
हिमालय छीन ले ८८
—वीरेन्द्र मिश्र
कातिल की ही तलवार उसे खा जाती है ९१
—'नीरज'
मेरे हिमालय की जय हो ९४
—प्रयाग नारायण त्रिपाठी
तुम नहीं झुको कहीं ९७
—रमानाथ अवस्थी
भारत की यह माटी पावन चन्दन है ९८
—विश्वदेव शर्मा

देश का प्रहरी १०१
—मेघराज 'मुकुल'
"आज़ाद रहो या मर जाओ' अब यही हमारा नारा है १०३
—बालस्वरूप 'राही'
महाकाल है तुंग हिमालय १०५
—उमाकांत मालवीय
सजग जवान हैं १०७
—रघुवीरशरण 'मित्र'
सच, यह देश नहीं हारेगा १०६
—राधेश्याम 'प्रगल्भ'
उड़ो उड़ो श्वेत पंख खोलकर, कपोत ११७
—सोम ठाकुर
भारत की जनता की जय हो ११६
—'कमलेश'
तुम हो चीन तो हम प्राचीन १२०
—भरत व्यास
वतन की आबरू खतरे में है १२२
—साहिर लुधियानवी
नेहरू की आवाज़ सारे देश की आवाज है १२३
—बिस्मिल इलाहाबादी
गीत १२४
—नज़ीर बनारसी
जवानों हो जाओ तैयार १२७
—व्रजेन्द्र गौड़
चीनी हमलावरों से १२६
—शंकर शैलेन्द्र
रक्त सुभद्रा का बहता है, नस में बहन तुम्हारी १३१
—विमला श्रीवास्तव
प्रयाण गीत १३२
—चन्द्रभूषण त्रिवेदी

बोलेंगे 'जय हिंद', हिन्द को दलित न होने देंगे १३३
—गोवर्द्धन प्रसाद 'सदय'
जागा वतन हमारा १३५
—शेरजंग गर्ग
राष्ट्र का मंगलमय आह्वान १३६
—देवराज दिनेश
पुत्र का अनुरोध १३८
—नारायण सिनहा 'विभु'
आज शपथ है तरुणाई की, माता-दूध शपथ है ज्वान १३९
—वासुदेव नारायण सिनहा
हिमालय का आह्वान १४१
—रामविलास शर्मा
गीता रख कर आज १४४
—कांति मोहन
पुकारता नगाधिराज १४६
—कमला प्रसाद अवस्थी
अरे ओ रक्त-लोलुप १४८
—रमेश नारायण तिवारी

मैथिलीशरण गुप्त

नवजीवन जागा

शिव संकल्पशील मेरा मन नवजीवन मे जागा
उमकी शान्ति भंग करने को आया कौन अभागा ?

मुन ले वह उद्भ्रान्त भयंकर
प्रलयंकर भी मेरा शंकर ।

खींच हिमालय को न सकेगा चीनाशुक का तागा,
शिव संकल्पशील मेरा मन नवजीवन मे जागा ।

●

विजय-पर्व

ऋषि दधीचि से गांधीजी तक
मिली हमे जो दीक्षा है,
बन्धुजनों, प्रस्तुत हो, उसकी
फिर आ गई परीक्षा है ।
फिर सब देखें कठिन नहीं निज
तपस्—त्याग बलिदान हमें,

परम्परा से पाया अपना
रखना है सम्मान हमें।
घर सँभालने में, तटस्थ हो,
लगे हुए थे जब हम लोग,
और चाहते थे जब सबका
पंचशील-सम्मत सहयोग।
तभी पड़ोसी चीन अचानक
होकर लोभ-पाप में लीन,
चला हमारी भूमि छीनने
तन का मोटा, मन का हीन।
हम निर्माण-निरत थे, नाशक
अणुबम नहीं बनाते थे,
अपने साथ दूसरों की भी
शान्ति-समृद्धि मनाते थे।
आक्रामक होकर ऐसे में
आकर जो हमसे अटके,
उठो, लगा दो उन्हें ठिकाने,
वे मदान्ध भूले-भटके।
शताब्दियों के पहले हमने
जिन्हें धर्म-शिक्षा दी थी,
विनिमय में धन-धरा न ली थी
मात्र साधु-भिक्षा ली थी।
आध्यात्मिकता से हटकर वे
नंगी भौतिकता में चूर,
हिंस्र-दृष्टि से गुरुकुल को ही
घूर रहे हैं कायर क्रूर।
राष्ट्र-संघ में शुद्ध-भाव से
हमने जिनका पक्ष लिया,

हमें उसी के लिए उन्होंने
देखो क्या उपहार दिया !'

उनकी यह दी हुई चुनौती
हम क्या अस्वीकार करें,
कोई हम पर वार करे तो
हम भी क्यों न प्रहार करें !'
ठोकर मार चिता दो उनको
देख रहे हैं जो सपने,
भूले नहीं प्रताप, शिवाजी,
गुरु गोविन्द हमें अपने।
आये जो जय-पत्र लिखाने
मृत्यु-पत्र लिख रक्खें वे,
लोहे के हैं चने हमारे
चखना है तो चक्खें वे।
अपने आप आ गया है यह
नई विजय पाने का पर्व
न था कौरवों को क्या, यदि है
उनको बहु संख्या का गर्व।
चर लें भले टिड्डियाँ उड़कर
इधर-उधर कुछ हरियाली,
पर जीते जी कहाँ लौटकर
वे हैं फिर जाने वाली।
दाँतों में तृण धरें ढीठ जो
पागल पशु-से आ टूटे,
पंजे यहाँ चलावें जब तक,
पावें निज छक्के छूटे।
पुरखों की खाई अफीम की
पीनक छाई है जिनमें,

क्यों न तोड़ने चलें मलिन वे
निकट देख तारे दिन में।

कृष्णा–गोदावरी–पंचनद,
गंगा–यमुना उमड़ी आज,
किन्तु एक चुल्लू यथेष्ट है
यदि है रिपुओं को कुछ लाज।

मार्ग न रहने दो जाने का
ऐसे आने वालों को,
मुँह की खानी हो उन मन के
मोदक खाने वालों को।

काल कठिन तो दृढ़ है हम भी,
स्थैर्य धैर्य साहस के संग,
आज वृद्ध भी युवा बने हैं
पाकर निज में नई उमंग।

मातृभूमि की रक्षा में हम
सिर भी सहज कटा देंगे,
भू-दानी हैं, रहो लुटेरो,
तुमको धूल चटा देंगे।

ऐसे आँख दिखाने से क्या
हो सकती है ऊँची नाक?
पहले अपने को तो देखो,
पीछे यहाँ जमाना धाक।

कब के प्रतिवासी होकर भी
जान न पाये तुम हमको,
पाप–पुण्य जो नहीं मानते
मानों अब अपने यम को।

हमें किसी का कुछ न चाहिए,
हम अपना भी छोड़ें क्यों,

विना बुलाया संकट आया
उससे भी मुँह मोड़ें क्यों ?
अटल रहे विश्वास हमारा
सत्य धर्म पर हम आरूढ़,
आज नहीं तो कल लोलुप खल
होंगे किंकर्त्तव्य-विमूढ़ ।
घर के साँप पंचमांगी हैं
बाहर के रिपु से भी घोर,
आपस के मत-भेद भूलकर
सजग रहें सब दोनों ओर ।
हिन्दू, जैन, बौद्ध वा सिख हैं
मुसलमान या ईसाई,
अपने एक देश के नाते
हम सब हैं भाई-भाई ।
सावधान ! साधन-सामग्री
टूट न पावे आज कहीं,
तब है, एक दूसरे से जब
कहला ले—अब और नहीं ।
उत्पादन का हर्ष जहाँ हो
वहाँ अधिक श्रम का क्या खेद,
रक्त दे रहे सुभट हमारे,
हमें बहुत क्या अपना स्वेद ।
बढ़ते हुए हमारे सैनिक
पिछड़ा हमें न पावेंगे,
जो स्वदेश पर बलि जाते हैं
हम उन पर बलि जावेंगे ।
धन तो तन का मैल, किसे है
आज स्वयं प्राणों का मोह,

गूँजे जीवन-गान एक रस
क्या आरोह और अवरोह ।
बाहर के बल का पूरक है
सच्चा भीतर का बल ही,
शस्त्रों का कहना ही क्या, लड
चुके निहत्थे हम कल ही ।
भौतिक भूत नहीं कर सकता
हमको अपने भय से मुक्त
जीवन में स्वाधीन रहेंगे
मर कर भी होंगे हम मुक्त ।
अपने आप लिया रिपुओं ने
न्याय-बुद्धि का यह अभिशाप,
यही बहुत, वैरी बन आया
कटने को यह अपना पाप ।
बलि देकर ही बल लेंगे हम
भीम-भामिनी-भीमा से,
जो पर हैं वे रहें परे ही,
हटें हमारी सीमा से ।

माखनलाल चतुर्वेदी

प्रलय रागिनी

चलो प्रलय रागिनी गा दें।

भरत—खण्ड क्या सुनते हो तुम,
आज लौंगजू की मनुहारें
सिर वाले, बलिपन्थी भी हम
क्या झुक जाएँ, हाथ पसारें ?
चलो उठो अब, प्रलय-रागिनी
गा दें, सागर को दहला दें
आज चीन को भारत से
भिड़ने का थोड़ा मज़ा चखा दें
हिमगिरि मुकुट कहाता अपना
अरे मुकुट पर वार सहोगे ?
गंगा जमना माँग रही हैं
बलियाँ, क्या इनकार करोगे ?

●

गंगा माँग रही है मस्तक जमना माँग रही है सपने

बूढ़ों की क्या बात युगों की तरुणाई के दिन आए हैं
चट्टानों, खन्दकों, पहाड़ों की खाई के दिन आए हैं

गंगा माँग रही है मस्तक जमना माँग रही है सपने
आज जवानी स्वयं टटोले, सिर, हथेलियाँ अपने अपने
कितने दिन से वृक्ष दे रहे संकेत है झुक आई डाली
कितने दिन से खड़ा अकेला अपने बागों का यह माली
आज सिद्ध करना ही होगा, नहीं जवाहर कभी अकेला
आज सिद्ध करना ही है यह आ पहुँची प्रयाण की वेला
चलो सजाओ सैन्य, समय की भरपाई के दिन आए हैं
आज प्राण देने के युग की तरुणाई के दिन आए हैं।

हिमशैल सदा ही मेरा है

कब किसने कह दिया, बचो, विश्राम लो
तुम मरने का मूल्य बिगाड़ो, दाम लो।
क्या बोले हिमशैल, किसे आबाद करें
मिटते मिटते कालिदास को याद करें?
हरे पत्र हैं, शब्द-शब्द हरिया उट्ठें
डालें, पीड़े, टैकड़ियाँ, सब गा उट्ठें।
किसने कहा कि यह बस रैन-बसैरा है,
मेरा है हिमशैल, सदा ही मेरा है।

यहीं कहीं उस माधव का
अलगोजा बोल रहा है रानी
राधा के पैरों की पायल
यहीं कह रही राम-कहानी।

नहा नहा भारत की कविता
यहीं अनुपम वार रही है
सरोवरों के दर्पण लखकर
अपना रूप सँवार रही है।

पारे की आँखों से झर पड़ते हैं—
———यहीं तरलतम मोती
इसीलिए विधवा ने दी है, दीख, दीठ
—आशिक की ज्योति।

यही कहीं पार्वतियाँ आती—
शैल सरों पर गागर लेकर
शरमा शरमा कर शिव से वे
ले जातीं है अपने घर भर।
वे झुकती है पानी भरने—
शैल शिखर झुक झुक जाते है
झूले से झूलते गगन तक
साँस-सँदेसा पहुँचाते है।
बेलि और वृक्षों पर बन कर—
आकृति कृति का रूप ले रही
दोनों टहनी झुका झुका, मुख—
ऊँचा कर कर दरश दे रही।
मानो नहा नहा मानस में—
हँसती हैं हंसों की पातें
करी किल्लोलें कर कर कहते—
जैसे दिन, वैसी ही रातें।

जल हिलता है सर में
नयन-गोल हिलते से दिखते उसमें
पलकें पंख बनी जाती है
नजरें दौड रहीं जिस तिस में।

गीले कुंतल खोल खोल, वे—
बोल बोल अपनी बोली में
रोज अलकनन्दा से बातें—
करती जातीं हमजोली में।

शैल शिखर भर इसे न समझो
गंगा बरस उठी है कण कण
यह दैवत है परम पुरातन
यह शिवशंकर, यह मनमोहन।

यह है मुकुट मातृ-भू तेरा
तीर्थ तीर्थ फल रहा धरोहर
यात्री सरवस चढ़ा चढ़ा कर
इससे पाते जीवन का वर।

सारा देश थिरक जाता है
जब यह शैल करवटें लेता,
भूकम्पों, बाढ़ों, झंझावातों
का वस्त्र सलवटें लेता।

कहीं कहीं निर्भयता फिरती
इसकी देश देश की प्यासी
यहीं कहीं सुन्दरता फिरती
इसके पुण्य-चरण की दासी।

इस पर बर्फ गिरी कि धुआँ सा
वन बन जाता साँझ सवेरे
सूर्य किरण देती रहती है
चँवर वनी अंगों पर फेरे।

धूपें यहीं मनोहारिणियाँ
छावें यहीं धूप की भाषा

बनती मिटती रोज संवरती
इस पर त्यागों की परिभाषा।

रोज क्षितिज देखा करता है
इस पर चढ़ चढ़ भू-मण्डल को
वृक्षों में इसके वैभव को
नदियों में चिर-संचित बल को ।

यह ऊँचा उठता रहता है
इसे देखने को सिर उठते
इसे देख जागृत हो जाते
सपने विधि के बनते मिटते ।

धूएँ के रेशमी दुशाले
ओढ़े खडी शैलवन टोली
यहीं कहीं प्रतिभा ने जग मे
सध्या सी सुन्दरता खोली ।

झरने खेल रहे हैं झर-झर
इसके ओंठ, जबान इसी की
स्मृतियाँ, गतियाँ, कृतियाँ, वृतियां
भारत में मेहमान इसी की ।

भारत में इसकी आगी है
भारत में इसका है पानी
इसकी ऊँचाई पर गर्वित
संस्कृति की अस्तित्व कहानी ।

मेरा पुरुष पुरातन है यह
यह अचला का अचल सलोना
भारत के आँगन में विकसित
इसका बन बन, कोना कोना ।

इसका मानसरोवर मेरा
भारत के अरमान निखरते
उस कैलास धाम पर मेरे
शिवशंकर हर रोज विचरते।

इस पर चलें शस्त्र उस दिन हम
अपना खून सींच देते हैं
जो ताकत ललचाती उसका
जीवन जल उलीच देते हैं।

रण-विदा

मां ! जीवन-अंजलि में मेरे तर्पण-हित कुछ अर्पित फूल ।
उन्हें करूँ क्या ? चढ़ा दिया, लो, चरणों की लेने दो धूल ।।
हृदय-द्वार हो गये बंद, कोने में जब क्रन्दित अनुराग ।
अरे सिखाना है जग को जीने का सच्चा राग-विराग ।।
इस निःसीम गगन के अंदर, कभी न होगा उल्कापात ।
फिर न देखने में आवेगा, बधिकों का भीषण उत्पात ।।
हो जाने दो नर्तन अधका, बस माँ ! है यह अन्तिम बार ।
दे देती आहों पर तेरी चण्डी को जग का अधिकार ।।
अलस न जायें हृदय-कुसुम, सुठि वितरण करते रहें सुगंध ।
सौरभ-लोलुप अलि को मंजुल भावों से ही कर दें अंध ।।
गूँज उठे यह चतुष्पार्श्व में, गर्वीला मन-निर्भयनाद ।
बलि हो जाऊँगी माँ-हित, माँ ऐसा दे तू आशीर्वाद ।।

तेरे श्वासों में ज्वाला हो, अधरों में मधुमादन

जागो, पंचशील की धरणी,
जीवन शौर्य जगाओ !
भू की अपराजेय चेतने,
नव युग चरण बढ़ाओ !

तेरे उन्मद पद चालन से कँपे मृत्यु, भय, संशय,
अंगभंगि से जीवन गरिमा फूटे चिर मंगलमय,
हाव भाव से विजय हर्ष, नव जनोत्कर्ष बरसाओ !

तेरे श्वासों में ज्वाला हो, अधरों में मधुमादन,
भ्रूविलास बलिदान दीप्त चितवन हो नव संजीवन !
इंगित पर जन शीश झुकें, जन शीश उठें, हे गाओ !

तेरी हिंसा रहे अहिंसक जन जीवन के रण में,
बजे सत्य की भेरी दुविधा मानो चीर जन मन में,
मृत्यु भीति हर, आत्म तेज भर, जन मन दैन्य मिटाओ !

रूढ़ि रीति के मुण्ड हृदय में ज्योति खड्ग हो कर में,
पदतल पर नतयुग दानव हो अरि का रुधिर अधर में,
रक्त पात्र से फिर नव चेतन अमृत ज्वाल छलकाओ !

युग युग का नैष्कर्म्य, नियति भय, जीवन विरति तमस हर,
आत्मा का अमरत्व जगा फिर जीवन मन के भीतर,
हे युग-युग सम्भवे, विश्व को नव सन्देश सुनाओ !

देख रहा मैं काल ध्वंस, कट रहे युगों के बन्धन,
उर-उर में मच रहा महाभारत—यह युग परिवर्तन,
कोटि कण्ठ मिल कर वन्दे मातरम् निनाद गुंजाओ !

काप उठे युग-युग के भूधर डुबा रहा तट सागर,
गरज उठा जन उर-अम्बर मृत्युजय इच्छा से भर,
विद्युल्लामिनि उठो, इन्द्रधनु-प्रभ तिरंग फहराओ !

हिमगिरि तेरा अविजित प्रहरी भू इतिहास बताता,
अडिग वज्र प्राचीर तुल्य वह—दृढ़ भौगोलिक नाता :
धधका ज्वालामुखी सदृश अब वह हिम से भस्मावृत,
ताण्डव नृत्य निरत फिर शंकर जगा देश चिर निद्रित
भारत की दुर्धर्ष शिखे, जन-जीवन-भीति भगाओ !

तुहिन शृंग बज उठे तूर्य बन, लो, भू-गगन निनादित,
बुद्धिहीन अरि फिर अंगद पण भारत से पद मर्दित !
स्त्री नर, तन मन धन यौवन की आहुति देने आओ,
रक्त दान का पुण्य पर्व यह भू की प्यास बुझाओ !

जागो, सहजीवन प्रिय धरणी,
नवयुग चरण बढ़ाओ,
ओ जन भू की शान्ति पीठ, फिर
जीवन शौर्य जगाओ !

ऊँचा है भारत का भाल

ऊँचा है नगराज हिमालय
मानदंड पृथ्वीतल का,
ध्यान समाधि-निलय मानो वह
निम्न भूमि के चल जल का !

उद्यत था रावण कि उठा ले
उसका शंभु शिखर कैलास,
आज आत्मरिपु कुछ वैसा ही
बढ़ चढ़ कर कर रहा प्रयास !

स्वयं उसी के लिए विघातक
यह दुष्कृत है निश्चय ही ,
भारत के जन जन में दीपित
शिव शंकर का नयन विभास :

ग्राम-ग्राम में, नगर-नगर में
नव जीवन जागा—छलका,
मन-मन में नगराज हिमालय—
मानदंड पृथ्वीतल का ।

घात लगाये था चुप-चुप जो
महा लोभ का वह विष-व्याल,
सहसा अपना फन फैलाकर
झपटा हम पर कुटिल कराल ।

डरते नहीं कदापि किसी से
हम निर्वैर अमृतधारी,
सदा मंगलाकांक्षी सबके,
नहीं किसी के अपकारी ।

बन्धु हमारे देश-देश में,
जन जन में है सभी कहीं,
हम पर जो वह करे आक्रमण,
उसके लिए भयंकारी ।

आक्रामक कोई हो, देंगे
यथा योग्य उत्तर तत्काल,
घात लगाये था चुप-चुप वह
महा लोभ का विषधर व्याल ।

यह आघात उधर, तत्क्षण ही
नव परिवर्तन हुआ इधर,
पुरुष सो रहा था जो हम में,
जाग्रत है—उद्यत उठ कर ।

अनुभव किया समग्र राष्ट्र ने,
किस भ्रम में हम थे जकड़े,
कहाँ गये वे जाति-धर्म-दल
भाषा-भाषा के झगड़े ।

भारत नहीं मृत्तिका का ही,
एक भाव वह एक स्वरूप
जितने अवयव, ये अथवा वे,
आपस में नग तुल्य जड़े ।

चोट पड़ी, तल-उपल टूटकर
जल फूटा, उछला निर्झर,

यह आघात उधर, तत्क्षण ही
नव परिवर्तन हुआ इधर।

भ्रातृभाव का चिर साधक है
यह गौतम-गांधी का देश,
नहीं वीर ही, महावीर भी
बनना है इसका उद्देश्य।

फिर भी युद्ध चाहते हैं जो
उन्हें युद्ध ही हम देंगे,
कायर बनकर कहीं पीठ पर
घाव कदापि नहीं लेंगे।

शूर हमारे हिमगिरि पर वे
जूझे अभी असम सम में,
श्रद्धा-सुमन सदा निज-पर के
उन पर सन्त बरसेंगे।

पद्म हमारे इस कर में है,
उसमें चक्र अमोघ अशेष,
भ्रातृभाव का चिर साधक है,
यह गौतम-गांधी का देश।

स्वयं प्राप्त इस घोर समर में
भारत का यह है उद्घोष :
जूझेंगे विगतज्वर रहकर—
निस्सन्ताप, बिना आक्रोश।

शत्रु हमारा हीन नहीं है,
सुदृढ़ संघट्टित है भरपूर,
गौरव है इसमें स्वकीय ही,
रहे शूर के सम्मुख शूर।

-लेंगे नहीं किसी का कण भर
अपना रंच नहीं देंगे,
शौर्य हमारा क्रौर्य नहीं है,
हो कोई कितना ही क्रूर।

जीवन के दोनों तट अपने
रक्खेंगे निर्मल निर्दोष,
स्वयं प्राप्त इस घोर समर में
भारत का यह है उद्‌घोष।

नहीं आक्रमण हिमगिरि पर यह—
उसे निगलना शक्य किसे ?
भारत में वह कौन, शत्रु ने
किया नहीं आक्रान्त जिसे ?

आज हमारे समर क्षेत्र हैं
घर-घर ग्राम नगर निःशेष,
लड़ना है जन-जन को बढ़कर
रहें न क्यों कितने ही क्लेश।

अपने खेत स्वेद के जल से,
आज सींचने हैं हमको,
नहीं भोग का समय, चाहिए
आज उपार्जन ही सविशेष।

द्वार सभी के रण आ पहुँचा,
दे स्वकर्म कौशल्य इसे,
भारत में वह कौन, शत्रु ने
किया नहीं आक्रान्त जिसे।

सावधान, सुन लें, सब सुन लें—
झुक न जाय भारत का भाल,

कठिन काल सम्मुख है, दें हम
उसके तांडव में द्रुत ताल।

शृंखल पराधीनता के वे
अभी-अभी हमने तोड़,
सबके साथ प्रेम के बन्धन
अभी-अभी हमने जोड़े।

रण यह निखिल विश्व के हित है,
प्रतिपक्षी के भी हित हेतु,
निज के ही निमित्त भूतल पर
शूर जूझते हैं थोड़े।

रहे प्रदीप्त जवाहर अपना,
वसुधा का यह निर्मल लाल,
सुनें, गुनें, सब सुनें राष्ट्रजन——
ऊँचा है भारत का भाल।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

लोहे के मर्द

पुरुष वीर बलवान,
देश की शान,
हमारे नौजवान,
घायल होकर आये हैं ।
कहते हैं, ये पुष्प दीप,
अक्षत क्यों लाये हो ।

हमें कामना नहीं सुयश-विस्तार की,
फूलों के हारों की जय जयकार की ।
तड़प रही घायल स्वदेश की शान है,
सीमा पर संकट में हिन्दुस्तान है ।
ले जाओ आरती, पुष्प, पल्लव हरे,
ले जाओ ये थाल मोदकों से भरे ।
तिलक चढ़ा मत और हृदय में हूक दो,
दे सकते हो तो गोली-बन्दूक दो ।

●

विजय पानी है तुझको
चाँद-सूरज पर, सितारों पर

सिपाही देखता है, देखता है तू अँधेरे को,
किरण को घेर कर छाये हुए विकराल घेरे को।
उसे भी देख, जो इस बाहरी तम को बहा सकती,
दबी तेरे लहू में रोशनी की धार है साथी।

पड़ी थी नींव तेरी चाँद-सूरज के उजाले पर,
तपस्या पर, लहू पर, आग पर, तलवार-भाले पर।
डरे तू नाउम्मेदी से, कभी यह हो नहीं सकता,
कि तुझमें ज्योति का अक्षय भरा भण्डार है साथी।

बवण्डर चीखता लौटा, फिरा तूफान जाता है,
डराने के लिये तुझको नया भूडोल आता है।
नया मैदान है राही, गरजता है नये बल से,
उठा इस बार वह जो आखिरी हुंकार है साथी।

गरजते शेर आये, सामने फिर भेड़िये आये,
नखों के तेज, दाँतों को वहुत तीखा किये आये।
मगर, परवाह क्या ? हो जो खड़ा तू तानकर उसको,
छिपी जो हड्डियों में आग की तलवार है साथी।

शिखर पर तू, न तेरी राह बाकी दाहिने-बाँयें,
खड़ी आगे दरी यह मौत-सी विकराल मुँह बाये
कदम पीछे हटाया सो अभी ईमान जाता है,
उछल जा, कूद जा, पल में दरी यह पार है साथी।

न रुकना है तुझे झण्डा उड़ा केवल पहाड़ों पर,
विजय पानी है तुझको चाँद-सूरज पर, सितारों पर
वधू रहती जहाँ नरवीर की, तलवार वालों की
ज़मीं वह इस जरा से आसमाँ के पार है साथी।

भुजाओं पर मही का भार फूलों-सा उठाये जा,
कँपाये जा गगन को, इन्द्र का आसन हिलाये जा,
जहाँ में एक ही है रोशनी, वह नाम की तेरे,
ज़मीं का एक तेरी आग का आधार है साथी ।

●

जनता जगी हुई है

जनता जगी हुई है ।
क्रुद्धा सिंहनी कुछ इस चिन्ता से भी ठगी हुई है ।
कहाँ गये वे जो पानी में आग लगाते थे,
बजा-बजा दुन्दुभी रात-दिन हमें जगाते थे ।
धरती पर है कौन ? कौन है सपनों के डेरों में ?
सोच न कर चण्डिके ! भ्रमित हैं जो, वे भी आयेंगे,
तेरी छाया छोड़ अभागे शरण कहाँ पायेंगे ?

जनता जगी हुई है ।
भारत-भूमि में किसी पुण्य-पावक ने किया प्रवेश,
काँप रहा है एक दीप की लौ-सा सारा देश ।
खौल रही नदियाँ, मेघों में शंपा लहक रही है ।
फट पड़ने को विकल शैल की छाती दहक रही है ।
गर्जन, गूँज, तरंग, रोष, निर्घोष, हाँक, हुंकार,
जाने, होगा शान्त आज क्या खाकर पारावार !

जनता जगी हुई है ।
ओ गांधी के शांति-सदन में आग लगाने वाले ।

मानवता के वधिक ! आसुरी महिमा के मतवाले !
वैसे तो, मन मार शील से हम विनम्र जीते हैं,
आततायियों का शोणित लेकर हम भी पीते हैं,
मुख में वेद, पीठ पर तरकस, कर में कठिन कुठार,
सावधान ! ले रहा परशुधर फिर नवीन अवतार।

जनता जगी हुई है।
मूंद-मूंद वे पृष्ठ पुष्प का गुण जो सिखलाते हैं,
वज्रायुध को पाप, लौह को दुर्गुण बतलाते हैं।
मन की व्यथा समेट, न तो अपने रण से हारेगा,
मर जायेगा स्वयं सर्प को अगर नहीं मारेगा।

पर्वत पर उतर रहा है महा भयानक व्याल,
मधुसूदन को टेर, नहीं यह बुद्ध का काल।
नीचे रणचंडिका कि उतरे प्रलय हिमालय पर से,
हिले अतल पाताल कि झर-झर झरे मृत्यु अम्बर से।
झेल कलेजे पर, किस्मत की जो भी नाराजी है,
खेल मरण का खेल, मुक्ति की यह पहली बाज़ी है।
सिर पर उठा वज्र, आँखों पर ले हरि का अभिशाप,
अग्नि स्नान के बिना धुलेगा नहीं राष्ट्र का पाप।

सूर समर करनी करहिं

सर्वथा ही
यह उचित है
• औ' हमारी काल-सिद्ध, प्रसिद्ध
चिर-वीर प्रसविनी,
स्वाभिमानी भूमि से
सर्वदा प्रत्याशित यही है,
जब हमें कोई चुनौती दे,
हमें कोई प्रचारे,
तब फड़क,
हिम-शृंग से आसिन्धु
यह उठ पड़े,
हुंकारे..............
कि धरती कँपे,
अंबर में दिखाई दें दरारें।

* * * *

शब्द ही के
बीच में दिन-रात बसता हुआ
उनकी शक्ति से, सामर्थ्य से—
अक्षम—
अपरिचित मैं नहीं हूँ।
किन्तु सुन लो,
शब्द की भी,
जिस तरह संसार में हर एक की

कमजोरियाँ, मजबूरियाँ हैं।—
शब्द सबलों की
सफल तलवार हैं तो
शब्द निर्बलों की
नपुंसक ढाल भी हैं।
जान लो भी,
जीभ को जब-जब,
भुजा का एवजी माना गया है,
कंठ से गाना गया है।

*　　*　　*　　*

और ऐसा अजदहा जब सामने हो
कान ही जिसके न हों तो
गीत गाना—
हो भले ही वीर रस का वह तराना—
गरजना, नारा लगाना,
शक्ति अपनी क्षीण करना,
दम घटाना।
बड़ी मोटी खाल में
उसकी सकल काया ढकी है।
सिर्फ भाषा एक
जो वह समझता है
सबल हाथों की
करारी चोट की है।

*　　*　　*　　*

ओ हमारे
वज्र-दुर्दम देश के
विक्षुब्ध क्रोधातुर
जवानों!
आज अपने वज्र के-से
दाँत भींचो,

खड़े हो,
आगे बढ़ो,
ऊपर चढ़ो,
वे कंठ खोलें।
बोलना हो तो
तुम्हारे हाथ की दी चोट बोले।

नरेन्द्र शर्मा

नये चीन के नाम

कैसे मानें तुम शलभ
शांति की शीलवती बाती पर,
तुम चढ़े चले आ रहे
हमारी धरती की छाती पर!

क्या साम्यवाद है यही
या कि नखदंतवाद, प्रतिवासी?
नीचा दिखला कर हमें,
चाहते, बने एशिया दासी!

बैठाया सिर पर तुम्हें,
लगे बरसाने हम पर डंडे।
आतंकित करके हमें,
चाहते झुकवाना सब झंडे।

मुख से कहते हो मित्र,
चित्त में अहंकार मद मत्सर!
बैठाया छत पर तुम्हें,
फूंकने लगे हमारा छप्पर।

प्राचीन चीन से विमुख,
पितृ-हन्ता हो तुम गुरुद्रोही,
जो बोधि वृक्ष का देश,
रौंदते चले आज उसको ही।

जानें कैसी वह क्रांति,
भूख से व्यग्र जहाँ के बहुजन !
निष्फल होकर, कर रहे
शांति के प्रति विश्रांति प्रदर्शन।

ले सके न तुम अब तलक
द्वीप वह छोटा-सा फार्मूसा,
आँखें दिखलाते हमें
लाल-पीली कर, तानें घूँसा।

गाधीजी का यह देश,
भीत होगा न तुम्हारे भय से।
वैसे हम भव की शांति,
चाहते हैं मन प्राण हृदय से !

विश्वास, विश्व की शांति
और मानवता के प्रति ममता,
राष्ट्रों के प्रति समभाव,
शील से रह सकने की क्षमता !

भारत की ऐसी मूर्ति,
मूर्तिभंजक बन कर तुम आये।
भारत को भाई कहा
और छल बल के जाल बिछाये।

सीमा निर्धारित हुई
वही, जो थी अनेक देशों की।
क्यों याद दिलाते हो हमें
कथा तुम द्रुपदा के केशों की ?

माना कि तुम्हें बल प्राप्त
अमित जन-संख्या का, दुर्योधन !

निश्चय लेंगे हम पुनः
गँवाये हुए हज़ारों योजन!

योजना निरत था देश,
राष्ट्र था शांति पूर्ण जनतंत्री,
तुमसे न हमें कुछ भीति,
बुद्धि से कहता था मन मंत्री।

कुछ कूटतंत्र में लीन,
बिछाते रहे जाल घर बाहर,
तुम एकछत्र साम्राज्य,
चाहते हो सारी वसुधा पर।

है विश्व क्रांति का नाम,
काम कोरे अत्याचारी के,
सौ रंगों के सौ फूल,
कहाँ माओ की फुलवारी के!

पाशविक शक्ति का गर्व,
दंभ है बनने का जन नेता,
साम्राज्यवाद के गृध्र,
चले तुम बनने विश्व विजेता।

भूतल के तुम भूचाल,
आग मन में है, मुँह में पानी।
मानवता के तुम काल,
मर्म की बात सभी ने जानी।

तुम क्रांति भ्रष्ट दुर्दस्यु,
विश्व के सबसे नये लुटेरे।
होगा न तुम्हारा चिह्न,
वहाँ पर, जहाँ तुम्हारे डेरे।

है जिसे भूमि की भूख,
भूमि की भूख उसे खा जाती
अत्याचारी के लिये
भूमि की आह मृत्यु की पाती।

देगी न तुम्हें अब ढील
शील स्वातंत्र्य शांति की सेना।
अन्याय बहुत सह लिया,
पूर्ण होगा सब लेना देना।

भारत के सिर का भार,
भूमि का भार, जिसे हटना है!
मानवता का अभिशाप,
चीन का पाप, जिसे कटना है!

मानवता लहू-लुहान,
कंठ तक भरी पाप की गागर।
ओ, नये चीन नादान,
डुबा देगा शोणित का सागर।

कैसा अशुद्ध वह तर्क,
बुद्धि क्या गई तुम्हारी मोही?
चीनी बस चीनी रहे,
और सब हों स्वदेश के द्रोही।

टपका करता है रक्त,
टपकती नहीं क्रांति ऊपर से!
तुम इतने नही सशक्त,
कभी जो हट न सको भू पर से।

तप्त लहू की धार बह चली

वो निकले ज़हरीले कीड़े लाल कमल से
तप्त लहू की धार बह चली तुहिनाचल से।

हमने देखा, रंग बर्फ का बदल रहा है
शांति-सुन्दरी का तो दम ही निकल रहा है
जी करता है, सीखूँ मैं बंदूक चलाना
जी करता है, सीखूँ मैं फौलाद गलाना
जी करता है, जन-मन में भड़काऊँ शोले
जी करता है, नेफा पहुँचूँ, दागूँ गोले
विश्व-शांति की घायल देवी चीख रही है
सर्वनाश की डायन हँसती दीख रही है।
दुनिया की छत पर टपकी है लार दनुज की
पंचशील से बिदक गयी चेतना मनुज की
सीमाओं पर लहराया भारत का यौवन
छलक गया है लहू शर्म से पिघला कंचन
दीपशिखा-सी कोटि-कोटि मन की इच्छाएँ
मचल उठी हैं, सेनापति का इंगित पाये
वो निकले ज़हरीले कीड़े लाल कमल से
तप्त लहू की धार बह चली तुहिनाचल से।

भाग ओ अभागे

भाग ! ओ अभागे !
भस्म हो जायगा आग के आगे !
जान से जायगा जात ! झखमारे !
काल के काल हम क्या रे ! ललकारे !
ताल यों ठोक मत जाल मार रे चीन !
मानते मित्रता पवित्र हम प्राचीन
राष्ट्रीय सीमा से हमारी भाग ! दूर जा !
होगी हड्डी-पसली चूर-चूर अन्यथा !
हिन्द की ओर ओरे ! ताके मत घूर-घूर !
लेंगे निकाल आँखें ! देंगे मुँह थूर-थूर !

दूर जा ! दूर जा ! भाग ! ओ, अभागे !
राख हो जायगा !
खाक हो जायगा !
भस्म हो जायगा आग के आगे
भाग ! ओ अभागे !

हमने दिया है बुद्ध तो,
फिर युद्ध भी देंगे हमीं।

ओ चीनियों, जाओ निकल लद्दाख से, हिम-भाल से।

हम तो तुम्हें समझा गये, झगड़े तुम्हीं उलझा गये,
हमने तुम्हें भाई कहा, तुम फौज लेकर आ गये,
पीछे हटो, पीछे हटो, आसाम से, गढ़वाल से,
ओ चीनियों, जाओ निकल, लद्दाख से, हिम-भाल से।

तुमको नहीं पहिचान है, यह क्रांति क्या तूफान है,
फौलाद की दीवार अब आजाद हिन्दुस्तान है,
टकरा न जाये सर कहीं फौलाद की दीवार से,
ओ चीनियों, जाओ निकल, लद्दाख से, हिम-भाल से।

जब से हुई दुनिया शुरू, चन्दा बने तारे बने,
नदियाँ, हिमालय, सिन्धु हिन्दुस्तान के सारे बने,
तब से हिमालय है खड़ा सट कर हमारी ढाल से,
ओ चीनियों, जाओ निकल, लद्दाख से, हिम-भाल से।

तुम हो कहीं, हम हैं कहीं, फिर भी निगाहें लड़ रहीं,
देखो अहिंसा हिन्द की, हिंसा न बन जाए कहीं,
थर्रा न जाये एशिया संग्राम के भूचाल से,
ओ चीनियों, जाओ निकल, लद्दाख से, हिम-भाल से।

लेकर हमारी क्यारियाँ, छोड़ो न यों किलकारियाँ
हम हो रहे अंगार हैं, छितरा रही चिनगारियाँ,
मानो न सच तो पूछ लो, कोचीन से, करनाल से,
ओ चीनियों, जाओ निकल, लद्दाख़ से, हिम-भाल से।

तुमको मना लेंगे हमीं, बिगड़ी बना लेंगे हमीं,
तुमको दिया है बुद्ध तो, फिर युद्ध भी देंगे हमीं,
ललकार बढ़ती आ रही, उज्जैन से, भोपाल से,
ओ चीनियों, जाओ निकल, लद्दाख़ से, हिम-भाल से।

कहते तुम्हें हम प्यार से, किसका भला तलवार से,
इन्सानियत के नाम पर, अब लौट जाओ द्वार से,
आँसू बहा लो भूल पर, फिर पोंछ लो रूमाल से,
ओ चीनियों, जाओ निकल, लद्दाख़ से, हिम-भाल से।

बीसों यहाँ पर बोलियाँ, पर एक सारी टोलियाँ,
तुमको न हो विश्वास तो देखो चला कर गोलियाँ,
मिल जायेगा उत्तर तुम्हें, कश्मीर से, इम्फाल से,
ओ चीनियों, जाओ निकल, लद्दाख से, हिम-भाल से।

मतलब यही मजमून का, फैले न मज़हब खून का,
खौले गरम होके कहीं पानी न देहरादून का,
बन्दूक शिमले से चले, तलवार नैनीताल से,
ओ चीनियों, जाओ निकल, लद्दाख से, हिम-भाल से।

समझो न हम कमजोर हैं, हम तो तुम्हारी ओर हैं,
वरना सुरक्षा के लिए हम आप सीनाज़ोर हैं,
सुन लो विदेशी भाइयों अब से इधर ना आइयो,
खुद भस्म होने के लिये, लपटें न लेकर जाइयो,

धरती हमारी लूट कर खेलो न अपने काल से,
ओ चीनियों, जाओ निकल, लद्दाख से, हिम-भाल से।

मस्ती तुम्हारी जान तो, उलझो जवाहरलाल से,
ओ चीनियों, जाओ निकल, लद्दाख से, हिम-भाल से।

प्रयाण-गीत

अगर कहना तुम्हे कुछ है, नये परिधान में बोलो,
अगर करना तुम्हें कुछ हो, नये प्रतिदान मे बोलो ।

बहुत कुछ कर चुके गर्जन,
बहुत कुछ कर चुके वर्जन,

बहुत कुछ कर चुके अर्जन, विसर्जन दान में बोलो,
अगर कहना तुम्हें कुछ हो, नये परिधान में बोलो ।

न शब्दों की रही कीमत,
न छन्दों की रही कीमत,

अगर कीमत चुकाना है, समर्पण-प्राण में बोलो,
अगर कहना तुम्हें कुछ हो, नये परिधान में बोलो ।

हिमालय कह रहा हमसे,
हिमालय कह रहा तुमसे,

हथेली पर लिये मस्तक, विजय-प्रस्थान में बोलो,
अगर कहना तुम्हें कुछ हो, नये परिधान में बोलो ।

समर भूमि में चलो

भारत माँ का मुकुट हिमालय, इसका मान सँवार लो!
इस पर पदाघात जो करता, उसका शीश उतार लो!

यह ऋषियों की तपोभूमि है, यह तीरथ का देश है,
गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र की इसमें कीर्त्ति अशेष है!
यहाँ पंचनद का उद्गम है, शिव का यहाँ निवास है,
भारत माँ के धवल-पुण्य का इसमें ही परिवेश है।

हिमगिरि के उस पार उठ रही पशुता की हुंकार है,
भारत माँ के वीर सपूतो, अब कर में तलवार लो!

इसी भूमि से जन्म तुम्हारा और रक्त का जोश है,
इसकी गोदी में सो जाना, यह अन्तिम परितोष है!
तुममें ही माता का बल है, तुम में उसकी आन है,
और तुम्हारे लिए देश के खनिज, धान्य का कोष है।

भारत भू पर जो प्रहार हो, तुम पर कठिन प्रहार है
कोटि-कोटि तुम भारतवासी अब रण का व्रत धार लो!

हिंसा का उद्दाम उपासक, मदोन्मत्त यह चीन है,
यह साम्राज्य बनाने निकला, न्याय-सत्य से हीन है!
मानवता को प्रबल चुनौती इसका यह बल दानवी,
इसके अगणित अत्याचारों से यह विश्व मलीन है।

त्राहि-त्राहि का आज उठ रहा पृथ्वी पर चीत्कार है,
तुम मानव हो, मानवता की रक्षा का आभार लो।

जीवन उसका जो स्वतंत्र है, जो बलशाली वीर है,
और वज्र की दृढ़ता लेकर, जो निर्भय है, धीर है!
कायर पग-पग पर मरता है, तुम तो अमर अजेय हो,
यहाँ तुम्हारी शक्ति, तुम्हारी सीमा की प्राचीर है।

आज चुनौती तुम्हें दे रही पशुता की ललकार है,
राम कृष्ण के वंशज जागो, वैरी से प्रतिकार लो!

कोटि-कोटि कण्ठों से गूँजे 'जय-भारत' 'जय-भारती'
कोटि-कोटि प्राणों के दीपों से हो माँ की आरती!
दहल जाय रिपुओं की छाती आज तुम्हारे रोष से,
इष्ट जगाओ आज युद्ध का न्याय-सत्य के हे व्रती।

भारत के जन-जन से उठता माँ का जय-जयकार है,
समर-भूमि में चलो, अमरता का पावन-उपहार लो!

देवी का वरदान

धूल धूसरित आर्य, उठो हे, निश्चय विजय तुम्हारी होगी।
यद्यपि प्रभु ने पूर्ण विजय का है चुपके से वचन दे दिया,
किन्तु तुम्हें तो बलि शीशों की अपनी यहाँ चढ़ानी होगी।
देश-मुक्ति का प्रश्न नहीं यह विश्व-मुक्ति का महायुद्ध है,
विश्व-जननि के वीर पुत्र की तुमको रीति निभानी होगी।
जीवन-श्रमश्लथ राहुग्रस्त यह धरा तुम्हारी राह देखती,
देवपुत्र हे, मनुज वृत्तियाँ कर्दम-मुक्त करानी होगी।
शब्द ब्रह्म, उस जग-कारण की अग्नि तुम्हें परचानी होगी,
और अन्न के इस प्राणी में वाचा शक्ति जगानी होगी।
मौन रहो, पीछे मत देखो, आगे आगे बढ़ते जाओ,
अभी बहुत कुछ करना है इक अतुलित शक्ति जुटानी होगी।
अपनी एक एक दुर्बलता गला गला फौलाद बनाकर,
अग्नि अस्त्र शस्त्रों की, उससे अपनी शक्ति बढ़ानी होगी।
जिसने हमको दलित बनाया, जिसने हमको पतित बनाया,
उस स्वार्थ से बने लघु लघु बाड़ों मे आग लगानी होगी।
सच है जग की सारी आशा भारत पर आधारित है,
पर प्रभु से भारत की आदि-प्रतिज्ञा तुम्हें निभानी होगी।
तुम आत्मा हो इस ऊँचे आदर्श के लिए जीना होगा,
औ' 'आदर्श जिए बस' उसके लिए मृत्यु अपनानी होगी।

हिमालय बना अग्नि का देश

हिमालय बना अग्नि का देश !

बनी है बर्फ पिघल कर आग
भरी गिरि शिखरों में हुंकार।
हरे वन तरु ने बदले वेश
हिमालय बना अग्नि का देश !

झलकता तलवारों-सा प्रान,
हुआ बारूदी संध्या-गान।
रात के उलझ गए हैं केश,
हिमालय बना अग्नि का देश !

आज तो भौंहें चढ़ी कमान,
वज्र से हुए भवन के गान।
भावना में आया आवेश,
हिमालय बना अग्नि का देश।

बर्फ मे ज्वाला का विस्फोट,
हृदय पत्थर का उठा कचोट।
धूल-कण हुए त्रिनेत्र-महेश,
हिमालय बना अग्नि का देश।

मुकुट माँ का यह रहा पुकार,
चलो बलि पंथी, शीश उतार।
हरो अब मानवता का क्लेश,
हिमालय बना अग्नि का देश।

कोटि कोटि कण्ठ

कोटि कोटि कंठ से है भारती उचारती--
आओ भारतीय करें भारत की आरती ।

तन है दिया, मन है बाती, आयु घी है, शक्ति ज्योति ।
साधना की लौ है जो है भावना उभारती ।।

शीश हिमालय महान—चरण सिन्धु जल-निधान
असम, महाराष्ट्र भुजा—दिल्ली हृदय समान ।
जनता है भक्त, जय-जयकार जो पुकारती ।।

भवानी प्रसाद तिवारी

राष्ट्र को जीवन दान करो

जीत मरण को, वीर, राष्ट्र को जीवन दान करो
समर-खेत के बीच, अभय हो, मंगल-गान करो

भारत-माँ के मुकुट छीनने आया दस्यु विदेशी
ब्रह्म-पुत्र के तीर पछाड़ो, उघड़ जाय छल-वेषी

जन्मसिद्ध अधिकार बचाओ सह-अभियान करो
समर-खेत के बीच, अभय हो, मंगल-गान करो

क्या विवाद में उलझ रहे हो ? हिंसा या कि अहिंसा ?
कायरता से श्रेयस्कर है—छल-प्रतिकारी-हिंसा

रक्षक शस्त्र सदा वन्दित है, द्रुत सन्धान करो
समर-खेत के बीच, अभय हो, मंगल-गान करो

कालनेमि ने कपट किया, पवनज ने किया भरोसा
साक्षी है इतिहास विश्व में किसका कौन भरोसा

है, विजयी विश्वास ! 'ग्लानि' का अभ्युत्थान करो
समर-खेत के बीच, अभय हो, मंगल-गान करो

महाकाल की पान-भूमि है, रक्त-सुरा का प्याला
पीकर प्रहरी नाच रहा है देश-प्रेम मतवाला

चलो, चलो रे, हम भी नाचें, नग्न कृपाण करो
समर-खेत के बीच, अभय हो, मंगल-गान करो

आज मृत्यु से जूझ राष्ट्र को जीवन दान करो
रण-खेतों के बीच, अभय हो, मंगल-गान करो।

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

फौलाद ढले,
फैक्टरियों में फौलाद ढले

आजाद देश की प्रथम परीक्षा हुई शुरु,
कुर्बानी का फिर नया जमाना आया है,
फिर नई चुनौती वहशी हूणों की आई,
फिर नये राष्ट्र ने भैरव-राग गुँजाया है।
हिमवान हुआ घायल तो सागर हुंकारा,
चालीस कोटि लहरों में फिर फुफकार उठी,
हर नौजवान सिर ले कर चला हथेली पर,
बलिदानों की वेदी पर हवि धुधकार उठी।
घर-घर की भट्ठी का ताप-क्रम तीव्र करो,
जिस में तप कर सब भेद-भाव की खोट गले,
फौलाद ढले, फैक्टरियों में फौलाद ढले।

हर साल दिवाली पर मिट्टी के दीप जला,
हम अंधकार से लोहा लेते आए हैं,
इस साल जल उठे आहुतियों के ज्योति-दीप,
घनघोर अमा के तार-तार थर्राए हैं।
हम काल-कूट पीने वाले प्रलयंकर हैं,
ताण्डव की तालों पर असुरों को रौंदेंगे,
कल जिसको हमने दया-क्षमामय बुद्ध दिया,
उस को बम-बम की गूँजों से थहरा देंगे,
हर भारतवासी जलती हुई मशाल बने
हर कदम-कदम पर दुश्मन की छाती दहले,
फौलाद ढले, फैक्टरियों में फौलाद ढले।

माँ के लाड़लो दूध की कीमत अदा करो
सिर पर केसरिया कफन बाँध, झूमो, मचलो,
माताओ-बहनो ! दुर्गा-चण्डी बनो आज
महिषासुर के मद का मर्दन करने निकलो,
चामुण्डा के मुंडों की माल अधूरी है
काली के कर का खप्पर अब भी रीता है,
जो हाँफ-हुमस से वरण मौत को करता है,
वह राष्ट्र अमर हो जाता, युग युग जीता है।
हिमवान हिमालय के शीतल उच्छ्वासों मे
विस्फोटक ज्वालामुखी दग्ध लावा उगले,
फौलाद ढले, फैक्टरियों में फौलाद ढले।

सिपाही का पत्र

मेरे देशवासियो !
पत्र लिख रहा हूँ तुम्हे मौत के बहाने से,
गगा, जमुना औ' ब्रह्मपुत्र के मुहाने से,
मूल्य मानवता के
समूल नष्ट करने को
उद्यत है अनाचार,
सत्य, प्रेम, आस्था के
मानदण्ड पर प्रहार !
दो की लड़ाई नही,
सरहदी झगड़ों की,
प्रश्न है कि विश्व-शान्ति

कुत्तों की मौत मरे या कि जिए,
जीवन के सत्वों की महिमा प्रशस्त किये
युद्ध यह नहीं है
राम-काज है हमारे लिए
बचपन में
रामायण बाँची थी तुलसी की
'समर मरण पुनि सुर सरि तीरा !
राम-काज क्षणभंगु शरीरा।'

नाम क्या बताऊँ बन्धु ?
पुत्र दीन विधवा का
पाला गया
आहों और आँसुओं की तौल पर,
जीवन के अभावों से
जूझता, झुलसता,
विगलित विश्वासों और करुणा के मोल पर
ग्राम का पता क्या दूँ ?
भारत के सारे ग्राम एक-से ही दिखते हैं
गलियारा, बैलगाड़ी, झोंपड़ियाँ फूस की,
खेतों की मेड़ों पर फसलों-सी खिलखिलाती
लहंगों की लहरों पर झूमती चुनरियाँ,
संध्या की लाली में नहाती-सी,
रंभाती गाय, बछड़े को चाटती।

तीन दिन हुए आज खंदक में पड़े-पड़े
आग, धुँए, विस्फोटक मौत के साये में,
एक प्रहर से कुछ शान्त है वातावरण
शान्ति ? जिसे सैनिक शान्ति कहते है,
भेड़ियों के दाढ़ों की दरार दरदराती है,
बर्फ की पर्तें पड़ रही हैं ओवरकोट पर,
ठिठुरन-सी दौड़ गई हड्डी तक

मज्जा भी जमती सुन्न होती नजर आती है।
गर्मी के नाम पर
माँ के ममत्व और
प्रीति-भीत परिणीता की स्मृति ही शेष है।
चिड़ियों की चहचहाट के साथ-साथ
किलक-किलक उठती हँसी
दुधमुँहे नटखट की।
दिख रही है माँ की डबडबाई आँख
डूबता दिल
पंचायत का रेडियो ही जिस का सुहाग है,
टूटी खटिया में पड़ी ताक रही आसमान
आँगन के बीचोबीच चमक उठा नाग है।
कोई कहला दे उसे
माँ तू न धीरज छोड़
शीश पर मेरे तेरे आशीष की छाया है,
तेरा ही नाम ले-ले कर तो जूझ रहा
नरमेधी गिद्धों के पंजे मरोड़ता
चट्टानी चोटों में खूनी चंचु तोड़ रहा।
दूध की शपथ खा कर कह रहा हूं
ओ अम्बे !
वीर माताओं का विरुद न खोने दूंगा,
लौटा तो मिलूंगा ललक
मस्तक पर चरण-रज
मल-मल कर, पुलक-पुलक,
अन्यथा, माँ !
पुण्य-कोख तेरी कलंकित न होने दूंगा।
कौन तुम ?
माँ के पास खड़ी-खड़ी सिसक रही,
हिचकियाँ लेती औ'
जल-जल कर घुलती मोमबत्ती-सी
झंझा में झकझोरी पीपल की पत्ती-सी।

तुम से आशा न थी
ऐसा दिल छोटा करोगी इस दुर्दिन में,
कातर बनोगी यों
ढालोगी अमंगल अश्रु मंगलमय क्षण में।
पूजा का समय है
खुल गए कपाट चण्डी के,
लाओ अगरु, अक्षत औ' रक्त-कमल
रक्त-सीकरों से सिंच-सिंच कर जो खिलता है,
एक का प्रश्न नहीं,
राष्ट्र पर संकट है,
मेरे समान ही सहस्रों
बलि होने को होड़ कर रहे हैं यहां,
ऐसा सौभाग्य
बड़ी मुश्किल से मिलता है।
एक छटपटाहट-सी
मुझको भी मथ रही
मिटने के पूर्व एक बार तुम्हें पाने की
रागमयी सिंदूरी आभा की लहरों में
डूब-डूब जाने की।
सोचने का समय नहीं
बलिदानी वेला में,
राष्ट्र के महान मुक्ति-पर्व
खेल-खेला में,
मुझे प्यार करती हो तो
इतना ही करना प्रिय
बच्चों को अनुभव न हो अनाथ
बड़े हो कर गर्वित हों
लेकर पिता का नाम
बार-बार पुलकित हो रोम-रोम
करुणामयि ! घूंटो अश्रु
कठिन क्षण परीक्षा का

फिर विकल्प कैसा है ?
नारी का भाग्य
सदा से ही रहा ऐसा है,
भीतर से जलती और
ऊपर मुसकराती हुई
गौरव बढ़ा दो मेरे पौरुष-पूर्ण प्रण का।
आग से खेलना सिखाओ
नन्हे-मुन्नों को
भावी सन्तानों को दाय यही देनी है,
शौर्य-धैर्य-उत्सर्ग युग की त्रिवेणी है।
आऊँगा, आऊँगा,
निश्चय ही आऊँगा,
विजयी तिरंगे की तरह फरफराता,
अर्जुन का कौल
आज थिरक रहा जिह्वा पर,
दीन न बनूँगा और
पीठ न दिखाऊँगा,
लाऊँगा, लाऊँगा,
रण की बहुमूल्य भेंट
रुद्ध राष्ट्र-गौरव के मुक्ति-गीत गाता।
संप्रति जल रहा हूँ।
हिम-मण्डित शिखरों पर दीप्त
अमा के अँधेरे को कुचलता, ललकारता,
अमर राष्ट्र के
अचल सुहाग की अखण्ड ज्योति
उष्ण रक्त के
अमोघ अर्घ्य से सँवारता !

रामकुमार वर्मा

हिमालय से

उत्तर के शृंगार !
        प्रश्न-चिह्नों जैसे ओ शृंगाकार !
पूछो इस भू-मण्डल से
        यह किसने छुआ देश का द्वार !
किसका यह विश्वासघात है
        जो गूँजा सीमा के पार,
गंगा की धारा के ऊपर,
        कैसे बही रक्त की धार !
पूछो किसने मानवता की छाती पर गोली मारी ?
किसके पैरों ने कुचली है, भारत की सीमा सारी ?

क्या उत्तर मिल गया ?
        चीन के दुस्साहस का मिला प्रमाण ?
यह समस्त इतिहास हो गया
        जैसे बिल्कुल ही निष्प्राण ?
इस भारत ने सिखलाया था,
        जिसे तथागत का निर्वाण ।
वही कर रहा राजनीति का
        आज छद्मवेशी निर्माण
तुमने रोका नहीं, उसे, अपनी विस्तीर्ण भुजाओं से !
हो मध्यस्थ हिमालय ! तुम अपनी हिम-शृंग ध्वजाओं से !

आज तुम्हारी शपथ !
        प्राण में जाग उठी भीषण ज्वाला ।

अरि-मुण्डों से पूर्ण बनेगी,
यह अपूर्ण-सी गिरि-माला !
भूमि-भाग का एक एक कण
बना हुआ है अंगारा ।
शान्ति-दूत भारत ने है फिर
भैरव बन कर ललकारा !
सुनो, आज यह देश युद्ध-व्रत में बन गया समूचा है,
सैनिक का उत्साह तुम्हारे हिम-शृंगों से ऊँचा है !

आज तुम्हारी दृढ़ता से भी
अधिक सुदृढ़ता पाई है !
जो चिनगारी सोई थी,
वह ज्वाला बन कर आई है !
कौन शत्रु सम्मुख होगा ?
यह महानाश की वाणी है ।
रक्त-तिलक मस्तक पर देकर,
सैनिक प्राणी-प्राणी है ।
तुम साक्षी रहना, हिमगिरि, हुंकार सत्य ने दे दी है,
दानव के मस्तक पाने को रक्त-भरी बलिवेदी है !

किसने कहा कि तुम जड़ हो
क्या तुममें है कैलास नहीं ?
प्रलयंकर के डमरू से
नाचा कण-कण में नाश नहीं ?
वह महाप्रलय फिर से होगा,
होगा विनाश प्राचीरों का,
क्षण-भर प्रलयंकर रुके,
घोष होगा भारत के वीरों का !
संसार सुनेगा शीघ्र कायरों का स्वर कितना धीमा है,
यह तुंग हिमालय आज हमारी छाती की दृढ़ सीमा है ।

बालकृष्ण राव

आज पहली बार

आज पहली बार जग ने
नमितशिर देखा
 नगाधिप को ।
विपर्यय !—आज जग ने
 अजरता की झुर्रियाँ देखीं !
व्यतिक्रम !—आज पहली बार देखा
 शिशिर में यह द्रवण
 हिम के हृदय का !
चकित, विस्फारित दृगों से
देखता है स्तब्ध हो संसार –
पहली बार
पार्थिव शुभ्रता के वक्ष पर अभिनीत
मानव मान्यताओं का विवर्तन,
सत्य का संहार
शिव के हास की अट्टालिका में !
यह पहेली है जगत की दृष्टि में,
पर दृश्य है कुछ और ही इस ओर —
पहली बार
नगपति ने नमित कर शीश
देखा स्नेह से उस भूमि को
जो छत्रछाया में पली युग-युग अभय, आश्वस्त ।
पहली बार
अवसर दे रहा है आज हिमाद्रि उदार

भारत भूमि को प्रतिदान का !
कैसा विपर्यय? किस नियम का है व्यतिक्रम
—सहज मानव धर्म में ?

चीनी हमले के विरोध में

आयु चली अविजेय सैन्य की हलचल दौड़ी
नीड़ों से निकले प्रभात के जागे पंछी
पंख पसारे फैल गई ललकार लहर की
दिशा-दिशा में
धुआं नहीं—यह जमा हुआ लोहा पिघला है
फन काढ़े फुफकार क्रूर संहार
शिलाओं पर उमड़ा !!
नत होंगे ही अब अवनत प्रलयंकर चीनी !
हत होंगे ही अब अनहत प्रलयंकर चीनी !
अगर-राग-रंजित स्वदेश का
महावीर का रक्तवेश है !
उत्तर के संकट से लड़कर
जय पाने का प्रण अशेष है।

●

हेलीकाप्टर के चालक के प्रति

मरण के भय के समर में
जो गया उत्पात के उल्का-उदर में,

यान लेकर, यान में बीमार लाने,
साहसिक झंकार लाने,
था कठिन लाना जहाँ से
और ले आया वहाँ से
टार्च की मृदु रोशनी के तंत्र में ही यंत्र खोले,
वह हमारा यान-चालक,
कुशलकामी, शत्रु-घालक,
इस हमारी पुण्य भारत-भूमि का गौरव-शिखर है,
अमर यश का मुकुट उसके शीश पर है,
मैं उसे इन पंक्तियों से कोटि बार प्रणाम करता,
वरद वाणी से अभय सरनाम करता ।

कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह

भारतीय सैनिकों से

बढ़ चले चरण ! बढ़ चले चरण !
सत्य के, शक्ति के, मुक्ति के, सख्य और साम्य के,
शौर्य के, प्रकाश के, विकास के
बढ़ चले चरण ! बढ़ चले चरण !
चीर अंधकार को, तैर क्षुब्ध सिन्धु को,
तोड़ विघ्न-पाश, रौंद-रौंद प्रतिरोध को
और पदाघात से बना अचल सचल,
बढ़ चले चरण ! बढ़ चले चरण !
ये सुदृढ़ चरण ! ये अडिग चरण !

भंग अवसाद,
दूर हो गया प्रमाद है,
विगत विषाद ये बढ़े
उठा निनाद है—
विजय हमारी, ध्रुव विजय हमारी है !
बढ़ चले चरण ! बढ़ चले चरण !

फिर मिली,
चेतना नवीन लोकतंत्र को,
फिर मिली
घटना महान् इतिहास को,
फिर मिली
दीप्ति आत्मत्याग की युवक-समूह को,

दृष्टि लक्ष्य से बँधी,
और गति सहज सधी,
बढ़ चले चरण ! बढ़ चले चरण !

निश्चय-अनिश्चय पर आज जय पा गया,
आ गया, नया प्रभात आ गया,
कौन यह भैरवी सुना गया—
"त्याग, बलिदान का पुण्य-पर्व आ गया !"
बढ़ चले चरण ! बढ़ चले चरण !
ये अभय चरण ! ये अडिग चरण !

आए पहले भी यहाँ
ग्रीक, शक, हूण, तुर्क,
अत्याचार, व्यभिचार, सर्वनाश साथ लिये,
किन्तु प्रत्याघात से हमारे छिन्न हो गये,
इस धरती के बीच खो गए,
संस्कृति की गोद में सो गए ।
किन्तु आज आया है चीन वह
हमने सिखाया था मनुष्यता का पाठ जिसे,
और दिया सभ्यता का ठाट जिसे,
भाई कहा,
स्नेह और प्रत्यय अशेष दिया,
विश्व में उसे भी कुछ मान मिले,
स्थान मिले,
इसके लिए ही सब मित्रों को अमित्र किया ।
और आह ! कितने उदार हम,
तिब्बत की भूमि
और जन, उसे भेंट किया !

आज वह चीन
यहाँ आया है,

कम्युनिस्ट क्रूरता के पैने नख-दंत लिये,
लाखों चंगेजों की रक्त की पिपासा लिये—
हिंसा हिटलर की,
असत्य गोयबेल्स का,
उस के कवच हैं—
प्रकट हुआ है कम्युनिज़म का स्वरूप वह,
नाज़ीवाद देख जिसे लज्जित नरक में ।
आज उसी दानव के दर्प के दलन को,
भारतीय सैनिको,
तुम्हारे बढ़ चले चरण !
बढ़ो वीर सैनिको !
तुम हो सपूत उस विश्ववंद्य भूमि के,
जिसने दिया है जन्म
राम को, कृष्ण को, चंद्रगुप्त मौर्य को,
विक्रम को, हूण-मृग-हरि यशोधर्म को,
राणा श्री प्रताप को,
शिवा को, लक्ष्मीबाई को—
तुम भी उन्हीं के अवतार हो,
कालचक्र जो अमोघ विष्णु का,
उसकी तुम्हीं ज्वलंत धार हो—
चिर शांतिकामी इस गौतम के देश की
परम सहिष्णु जनता के
वह रोष हो,
जाग्रत आक्रोश हो,
प्रलयंकर रुद्र का
तीसरा नयन कहते हैं जिसे !
बढ़ चले चरण ! बढ़ चले चरण !

एक बार के उठे चरण
ये न अब रुकें कभी,
उन्नत हिमाद्रि से शीश न झुकें कभी,

जब तक लोक तंत्र का भविष्य
विश्व में सुरक्षित न हो जाए,
चीन और तिब्बत के
पीड़ित, दलित, अश्मीभूत जन-जीवन को,
दानवीय त्रास से स्वतंत्रता न मिल जाए।
तुम चलो, बढ़े चलो,
और यहाँ खेतों में तुम्हारे लिए
बांधव तुम्हारे हरी फसलें उगाएँगे
दिन-रात एक कर।
और दिन-रात रात-दिन,
कारखाने अपने चलेंगे
न रुकेंगे कभी,
देंगे तुम्हें
साधन समग्र वे
अंतिम विजय के
इस क्रूर शत्रु पर
इस धूर्त शत्रु पर।
आशीर्वाद दे रही हैं तुमको
वीरप्रसू माताएँ तुम्हारी, सुनो—
और वीर पत्नियाँ,
दे रही हैं शक्ति तुम्हें अपने सतीत्व की—
स्नेहशीला बहनों की
राखियाँ सजाये निज वज्र-सी कलाइयों में,
बढ़ते ही जाओ वीर! बढ़ते ही जाओ वीर
चीन की अनीति के दुरंत अंधकार को।
माओ और चाओ से कह दो—
"सैनिक हैं हम षण्मुख कार्तिकेय के,
जिसने तुम्हारे ही प्रदेश के
क्रूर नरकासुर को,
उसके असंख्य सैन्य आसुरी को,
धूल में मिलाया था।"

विजय तुम्हारी है, विजय तुम्हारी है !
सत्य और धर्म है तुम्हारे साथ !
गीता कहती है— "उठो, युद्ध करो, विगतज्वर युद्ध करो।
क्षत्रिय को यदि धर्म-युद्ध मिल जाता है,
भाग्य जग जाता है,
दिव्य द्वार स्वर्ग का स्वयं ही खुल जाता है।"

क्षत्रिय तुम्हीं हो इस देश के,
रक्षक तुम्हीं हो इस देश के
संस्कृति के, धर्म के, जनता
के मूल स्वाधिकार के, और लोक तंत्र के !
बढ़ चले चरण ! बढ़ चले चरण !

सेना के जवानों से

एक बार फिर अन्यायी पर तुमने भुजा उठायी है।
सीमाओं पर घिरे शत्रु को फिर तुमने ललकारा है
आज तुम्हारे कंठ-कंठ में बलिदानों का नारा है
ऐसा है इतिहास हमारा, ऐसा देश हमारा है
यहाँ न जीता पापी अब तक धर्मी कभी न हारा है
फिर दुनिया को यही दिखा देने की बारी आयी है!
जब जब बजा युद्ध का डंका तुमने रक्त बहाया है
रचे अजेय व्यूह ऐसे, वैरी भय से थर्राया है
तुमने बारूदों के महलों मे अंगार लगाया है
बिछा फड़कती लाशें तुमने आगे कदम बढ़ाया है
तुमने रची मरण से जीवन की हर बार सगाई है।
ओ! वीरों के महाद्वीप, ओ! महाशौर्य की सन्तानो
विश्व-शान्ति के ओ! विश्वासी, मानवता के जयगानों
आक्रान्ता, अन्याचारी के सर्वनाश के अभियानों
जननी के हिमवन्त भाल की महिमा के ओ आह्वानों
नरभक्षी हूणों ने बर्बरता की आग लगायी है!
खून हमारा ले लेकर तुम बनो अजय ओ! अभयंकर
हमें यहाँ से ज्योति तुम्हारी प्रतिक्षण दिखती दीपंकर
आततायियों को दहलाता रहे तुम्हारा तेज प्रखर
यह सत्ता का नहीं, स्वत्व की रक्षा का जयनाद अमर
आज तुम्हीं में जन-जन के जीवन की ज्योति समायी है!
तुम संगीनों की नोकों पर उगी अमरता के भागी
महावीर्य के सोये सागर में बाड़व ज्वाला जागी

माँ के चरणों पर अर्पित तुमने जीवन-तृष्णा त्यागी
कब आज़ादी के बन्दों ने शोलों से पनाह् माँगी ?
फिर अन्यायी ने स्वदेश-सीमा पर घात लगायी है !
बढ़ो हथेली पर सिर लेकर हम भी पीछे आते है
विजय-पताका नहीं झुकेगी यह विश्वास दिलाते हैं
घर-घर में उभरे साहस के ज्वालागिरि अकुलाते है
क्षुब्ध छिन्नमस्ता माँ की सौगन्ध तुम्हें पहुँचाते हैं
अपनी मुण्डमाल तुमने जयश्री पर सदा चढ़ायी है !

रणभेरी

रणभेरी बज रही, वीरवर पहनो केसरिया बाना।

आज हिमालय के मस्तक पर बर्बर शत्रु सवार हुआ,
आज हमारी मातृभूमि पर दस्यु चीन का वार हुआ,
धोखे से कर घात हमारे ऊपर दुश्मन गाज रहा,
हमें पद-दलित करने को वह अपना दल बल साज रहा,
उठो, सँभालो शस्त्र, हमें है युद्ध भूमि में डट जाना
रणभेरी बज रही वीरवर, पहनो केसरिया बाना।

रौंद रहे माता की छाती आज आततायी पामर,
जननी तुम्हें पुकार रही है चलो हिंद के नर-नाहर,
जिस जननी ने जन्म दिया है अपना दूध पिलाया है,
जिसकी गोदी में पल कर हम सबने जीवन पाया है,
आज उसी की लाज बचाने हमको है रण में जाना
रणभेरी बज रही वीरवर, पहनो केसरिया बाना।

आज देश पर संकट भारी, समय नहीं अब सोने का,
दुश्मन घर में घुस आया है एक न पल अब खोने का,
भारत माता के पुत्रों का अग्नि-परीक्षण होना है,
देखें कौन निकलता पीतल कौन निकलता सोना है।
माँ का दूध पुकार रहा है, हमें समर में है जाना
रणभेरी बज रही वीरवर, पहनो केसरिया बाना।

उधर हमारे भाई जूझें बर्फीली चट्टानों पर,
इधर बैठ हम नाचें गायें झूमें मादक तानों पर।

उधर हजारों शीश कटे, हिमवान लहू से लाल हुआ,
इधर हमें क्या चार बूंद भी देना रक्त मुहाल हुआ ।
नहीं नहीं, हो उठा देश का बच्चा बच्चा दीवाना,
रणभेरी बज रही वीरवर, पहनो केसरिया बाना ।

आज कृष्ण ने कुरुक्षेत्र में फिर से शंख बजाया है ।
गीता का सदेश अमर यह फिर से हमें सुनाया है ।
उठो, धनजय, युद्ध करो, छोड़ो अब असमंजस सारा,
उठो, उठाओ अस्त्र, तुम्हें है क्रूर शत्रु ने ललकारा ।
धर्म युद्ध है छिड़ा, धर्म है इसमें जाकर खप जाना,
रणभेरी बज रही वीरवर, पहनो केसरिया बाना ।

तुम्हें शपथ राणा प्रताप की अपना शीश झुकाना मत,
तुम्हें आन है वीर शिवा की पीछे कदम हटाना मत,
गुरु गोविंद पुकार रहे हैं बढ़ो वीर सब बलिदानी,
चलो, शत्रु को मार भगाओ कहती झाँसी की रानी,
महावीर उस्मान ब्रिगेडियर तुम्हें पुकारे मरदाना,
रणभेरी बज रही वीरवर, पहनो केसरिया बाना ।

जागा हिन्दुस्तान

गरज उठा गिरिराज हिमालय, टूटा शिव का ध्यान
गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र के गरज उठे मैदान
गरज उठीं आँधियाँ प्रलय की, गरज उठे तूफान
गरज उठे चालीस कोटि जन, जागा हिन्दुस्तान

जागा हिन्दुस्तान कि जागे खेत और खलिहान
जागा हिन्दुस्तान कि जागे सब मजदूर किसान
मन्दिर, मस्जिद औ' गुरुद्वारे, जागे वेद, कुरान
जागा हिन्दुस्तान कि जागे धर्म और ईमान

जाग उठा सौभाग्य देश का, तोड़ तिमिर के पाश
जागी नई जिन्दगी, जागा नया आत्म-विश्वास
जागे सूर्य, चन्द्रमा जागे औ' जागे शुभ नक्षत्र
जाग उठी यह पृथ्वी, जागे अन्तरिक्ष, आकाश

जागे ब्रह्म, देवता जागे, रोम-रोम में राम
जागे नगर, गाँव, घर जागे, जागे तीरथ-धाम
नई भोर के सपने जागे, जगी सुहागिन शाम,
नई उमंग, नई लौ जागी, अब 'आराम हराम'

जाग उठी हैं बहू-बेटियाँ, जाग उठी तरुणाई
जाग उठी पद्मिनी कि जागी रानी लक्ष्मीबाई
रणभेरी बज रही, दिशाएँ मंगल मना रही हैं
जागा पृथ्वीराज कि जागे कोटि चन्द बरदाई

योद्धा अपराजेय यही है, नवयुग की हुंकार
वज्र मरीखे टूटा करते दुश्मन पर ललकार
इनका विजय-ध्वज फहराना हिमगिरि के शिखरों पर
इनकी जय-जयकार हो रही सात समन्दर पार

बहनें बांध रहीं भाई को फिर राखी के धागे
ये दधीचि के पुत्र कि इनसे अब कोई क्या माँगे
मातृभूमि के लिए निछावर करने को सर्वस्व
होड़ लगी है, कौन रहेगा आगे, सबसे आगे

तन से, मन से, धन से करते थे रण की तैयारी
अपने लोहू से सींचेंगे ये अपनी फुलवारी
प्राण भले ही जाएँ, वचन ये कभी न जाने देंगे
भीष्म प्रतिज्ञाएँ निभा चुके ये भारी से भारी

इन्हें व्यर्थ मत छेड़ो, ये हैं महावीर हनुमान
अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर जैसे सबके सब बलवान
ये राणा प्रताप के वंशज, शेरशाह की शान
ये सपूत भारत माता के, ये रणवीर जवान

जान हथेली पर लेकर ये अंगारों पर चलते
कदम मिला कर ये तलवारों की धारों पर चलते
शीश-दान के लिए सर्वदा इनके प्राण मचलते
कभी न बुझते, ये मशाल की तरह हमेशा जलते

ये बल-विक्रम के प्रतीक हैं, ये नरसिंह महान
यही फूंकते हैं पर्वत की चट्टानों में प्रान
ये सरहद के वीर पहरुए, लोहे के इन्सान
इनकी राह रोकना कोई खेल नहीं आसान

अंगारों से धधक रहे हैं देखो इनके लोचन
मस्तक-मस्तक पर अंकित है लाल रक्त का चंदन
ये हैं महारुद्र प्रलयंकर, करते तांडव नर्तन
वीरभोग्या वसुन्धरा करती इनका अभिनन्दन

ये हैं बाण धनुष से छूटे, गूंज रही टंकार
ये हैं आग उगलते गोले, टैंक, तोप, तलवार
राष्ट्र-धर्म पर मर मिटने को ये हरदम तैयार
चली शत्रु से लोहा लेने इनकी जयजयकार

गीत

जब तक अंतिम बूँद रक्त की, जब तक अंतिम शस्त्र हाथ में—
मिट जाएँगे, लेकिन माँ के सिर का शुभ्र दुकूल न देंगे ।

हम मिट-मिट कर बनने वाले,
मर कर पुनः जनमने वाले ।
बरस अठारह छतरी जीवे
गाते हम जगनिक मतवाले ।

जब तक मावत अंतिम चूड़ी, जब तक अंतिम माँग सिन्दूरी—
तिल-तिल कट जाएँगे, लेकिन ब्रह्मपुत्र के कूल न देंगे !

मत सोचो संख्या में कम हैं,
पुरखों के सदेह विक्रम हैं ।
सवा लाख से एक लड़ाएँ
उन सिंहों के वंशज हम हैं ।

जब तक माँ की अंतिम लोरी, अंतिम माखन भरी कटोरी—
देश-प्रदेश प्रलाप, पिनक का सूखा एक बबूल न देंगे !

याद हमें केसरिया बाना,
मृत्यु हमें भाँवर डलवाना ।
माँ की कोख सिखा देती है
चक्रव्यूह भेदन कर जाना ।

जब तक अंतिम माथे टीका, अंतिम कर धागा राखी का—
हिमगिरि तो क्या अपनी धरती की चुटकी भर धूल न देंगे ।।

जहाँ गर्व के गर्व झड़े हैं,
उस धरती पर हुए बड़े हैं।
साक्षी है इतिहास युद्ध में
कितनी बार कबंध लड़े हैं।

जब तक अंतिम लक्ष्मी घर में, अंतिम प्राणाहुति खप्पर में—
गिरिवन को क्या ताक रहे हो, मरझाया भी फूल न देंगे।

रमा सिंह

पुनरावृत्ति

यह चीनी आक्रमण नहीं
भारतीय इतिहास का
एक नया पृष्ठ है,
इस पृष्ठ पर अंकित है
संकल्प की शक्ति
आस्था के स्वर
स्वाभिमान की गूँज
और
बलिदान का गौरव !

यह चीनी आक्रमण नहीं
हमारे संकल्प की
परीक्षा है,
यह प्रतिज्ञा की कसौटी
और
बलिदान की दीक्षा है !

यह चीनी आक्रमण नहीं
यह है हमारे प्राचीन गौरव की
एक पुनरावृत्ति,
इसमें अंगड़ाई ले कर जाग उठी है
हमारे इतिहास-पुरुषों की
भव्य आकृति !

राम की प्रत्यंचा
चीनियों के हिंस्र दानव को दलने के लिए
फिर चढ़ रही है,
लक्ष्मण के उत्साह की धारा
दुष्टों के दमन के लिए वेग से
बढ़ रही है !

अर्जुन का गांडीव
अन्याय से लोहा लेने के लिए
फिर प्रस्तुत है,
भीम की गदा
शत्रु का रक्त पीने के लिए
लालायित है !

राणा प्रताप के त्याग ने
आज फिर
हिमशिखरों पर पत्तों का भोजन किया है,
शिवाजी के कर्म-कृपाण ने
स्वतंत्रता की रक्षा का
पावन व्रत लिया है !

जब-जब अन्याय ने
शीश उठाया है—
हमारी धर्म शक्ति ने
उसे तब-तब झुकाया है !

जब-जब आक्रामक ने
हमारे स्वाभिमान पर
आघात किया है,
तब-तब हमारी निष्ठा ने
उसे पराजित किया है !

इतिहास के ये पृष्ठ
अपने आप को
फिर दुहरा रहे हैं,
बलिदान की ज्वाला में तपे हुए
इन पृष्ठों के अक्षर
खरे सोने की तरह
निखरते चले आ रहे हैं !

ओ अधर्म के दैत्य चीन !
तुम्हें चेतावनी है--
हमारे इतिहास से मत टकराओ,
अपनी अबूझ और निर्दोष जनता को
अपनी महत्वाकांक्षा की ज्वाला में
हविषा मत बनाओ !

गिरिधर गोपाल

जागते रहना

पहरुए जागते रहना !

वतन पर आज काली आँधियों की रात छायी है,
घटाएँ जो बमों को, गोलियों को साथ लायी हैं,
कि जिसकी हर नजर विष से बुझी है, हर हँसी धोखा,
मरण के देवता के संग हुई जिसकी सगाई है।

पहरुए जागते रहना !

पड़ा फिर सरहदों पर दुश्मनों का आज डेरा है,
तुम्हारी भूमि को फिर अजगरों ने आज घेरा है,
तुम्हारे स्वप्न तक इसका न खूनी हाथ बढ़ जाये,
अँधेरे में छिपा देखो खड़ा बर्बर लुटेरा है।

पहरुए जागते रहना !

कलों पर, कारखानों पर, फसल के मुख सलोने पर,
तुम्हारी माँ बहन पर, प्यार पर, शिशु के खिलौने पर,
तुम्हारे मंदिरों पर, मस्जिदों पर, धर्मग्रन्थों पर,
नजर इसकी महावर पर, नजर इसकी दिठौने पर।

पहरुए जागते रहना !

तुम्हारे ही भरोसे हमने यह कुटिया बनायी है,
तुम्हारे ही भरोसे हमने यह बगिया उगायी है,
तुम्हारे ही भरोसे शत्रु को ललकारते हैं हम,
तुम्हीं पर आस पूरी कौम ने प्यारे लगायी है।

पहरुए जागते रहना !

जागरण गीत

लोरी गान न गाना जननी, अवसर नहीं भुलाने का,
गान जागरण के माँ गाओ, आया समय जगाने का ।।

लछमन राम कहाँ सोए हैं, जन जन में उन्हें जगाओ,
टेर कहो हनुमान वीर से आ चीनी लंका ढाओ ।
कहो कृष्ण से चक्र सुदर्शन ले समर क्षेत्र में जाओ,
एक नहीं लाखों अर्जुन को, फिर धर्म-युद्ध सिखलाओ ।

आया समय समर में फिर से कर्मयोग दुहराने का,
गान जागरण के माँ गाओ, आया समय जगाने का ।।

अर्जुन, कर्ण, भीम, दुर्योधन, अब लड़ें न भाई भाई,
कौरव पांडव मिल कर जूझें, यह घर की नहीं लड़ाई ।
देवासुर संग्राम चीन ने भारत पर करी चढ़ाई,
भीष्म पितामह का प्रण जागे बल पौरुष की प्रभुताई

आज महाभारत जागा, औ' समर राजपूताने का,
गान जागरण के माँ गाओ, आया समय जगाने का ।।

जाग उठे राणा प्रताप-सी भारत की नई जवानी,
विकराल काल-सी वीर शिवा की जागे पुनः भवानी ।
त्याग गुरु गोविन्द का जागे, उठ खड़े सिक्ख बलिदानी,
वन्दा बैरागी, गोरा, बादल शूर वीर क्षत्राणी ।

देश प्रेम की ज्वाला भड़के, समय खड्ग खड़काने का,
गान जागरण के माँ गाओ, आया समय जगाने का ।।

सन् सत्तावन की क्रांति जगे, फिर युद्ध ठने घमसानी,
चौहान, मराठा, नाना, टोपे, लक्ष्मीबाई मर्दानी ।
गांधी की आँधी फिर जागे, उठ पड़े वीर बलिदानी,
वीर भगतसिंह, आज़ाद साहसी औ' सुभाष सेनानी ।

आज सुनहरा मौका आया, नाम अमर कर जाने का,
गान जागरण के माँ गाओ, आया समय जगाने का ।।

रक्त पुकार रहा पुरखों का, सुनो शहीदों की बानी,
फिर इतिहास बदलता करवट, फिर माँग रहा कुर्बानी ।
माँ का आँचल खींच रहा है कुटिल चीन अभिमानी,
किंचित भाग न जाने देना, यह धरती है बलिदानी ।।

विजय जवाहर फिर से पाए, अवसर हाथ बँटाने का,
गान जागरण के माँ गाओ, आया समय जगाने का ।।

ऐ हमारे देश के प्रहरी महान!

ऐ हिमालय, ऐ हमारे देश के प्रहरी महान,
तूने देखा है पतन भी, देश की देखी है शान।
देश के इतिहास के निर्माण के नायक प्रधान,
युग-युगों से कर रहे हैं तेरे यश का कवि बखान।
रक्त के बादल उमड़ कर देख हैं आए कहीं,
तेरी उजली पाग पर धब्बा न आ जाए कहीं।
था बढ़ाया हाथ जिससे दोस्ती के वास्ते,
गोलियाँ मारी उसी ने दुश्मनी के वास्ते।
छेड़ दी उसने लड़ाई है खुदी के वास्ते,
आ गया सरहद पै वह डाकाज़नी के वास्ते।
है कसम तेरी दिखा देंगे उसे दोज़ख की राह,
लेंगे इस अन्याय का बदला, हिमालय रह गवाह।
मानते आए हैं तुझको हम सदा से देवता,
तेरी धाराओं से जीवन की मिली हमको सुधा।
शान्त था उद्यान तेरा प्रेम सौरभ से सना,
बिजलियाँ उस पर गिराकर बेवफा ने की जफा।
आज लेकिन सर उठा है जो नशे की भूल में,
हम वही सर लोटते देखेंगे तेरी धूल में।
तेरे आगे वीरता के हम दिखाएँगे चरित्र,
तेरे कण कण पर मरेंगे, तुम दुखी होना न मित्र!
चन्द्रगुप्त महान का अब सामने आता है चित्र,
जाग उठी है आत्मा झाँसी की रानी की पवित्र।

राह पर लाना हमें है अक्ल को गुमराह की,
हो रही है कब्र में कम्पन बहादुर शाह की।

हम अहिंसा के पुजारी हैं मगर बुज़दिल नहीं,
खून से भी खेलना कुछ है हमें मुश्किल नहीं।
कायरों में आज तक यह कौम है शामिल नहीं,
आज मिटने को न हो तैयार जो वह दिल नहीं।

हे जवानों देश के तुम आज प्रलयंकर बनो,
चीनियों को भस्म करने के लिए शंकर बनो।

तोप हो या टैंक हो, चाहे बमों की मार हो,
मोरचे पर चीन की मारी खड़ी सरकार हो।
सूरमा भारत के जागे उनकी जयजयकार हो,
आज बच्चे-बच्चे के मुख से यही ललकार हो—

आएँ तकलीफें बला की जिन्दगी पर झेलकर,
मॉम लेंगे हम इन्हें नेफा के बाहर ठेलकर।

कर्त्तव्य की पुकार

महिषासुर-मर्दिनी भवानी,
जय अम्बिके, कराली जय !
उग्र, कपर्दी, नीलकण्ठ, त्रिपुरारि
काल कपाली जय !
परशुराम जय, हनूमान जय,
जय अर्जुन के तीखे बान !
उठो, भीम की गदा, तुम्हारी
'नेफा' में होगी पहचान !
बलदाऊ, तानो हल अपना
चाऊ सम्मुख आया है ।
हे यदुनन्दन, धर्म-ग्लानि का
समय देश पर छाया है !
रण में रथ ले चलो मित्र अब,
पांचजन्य में स्वर भर दो !
अर्जुन के मन में अब फिर से
कर्मयोग जागृत कर दो !
कहीं मोह का समय नहीं अब
उठो, जियो औ' राज्य करो !
स्वर्ग प्राप्ति के लिए अन्यथा
रण में तन का त्याग करो ।
जब माँ पर संकट आया हो,
तब आलस्य खुमारी क्या ?
जब कर्त्तव्य पुकार रहा हो,
तब विलम्ब से यारी क्या ?

बलिदानों का वक्त दोस्तो,
नहीं हर समय आता है।
कभी-कभी ही माँ का कर्जा
जरा चुकाया जाता है।
मातृ भूमि पर सिर की बाजी,
कभी-कभी ही लगती है।
कभी-कभी ही इतिहासों में
अमर शहादत जगती है।
इम्तिहान माता बेटों का
कभी-कभी ही लेती है।
कभी-कभी ही नियति मनुज को
वक्त मरण का देती है।
वरना भोग बुढ़ापा, पाकर
रोग, लोग मर जाते हैं।
पर वे नर हैं धन्य,
मौत को रण में गले लगाते हैं।
बढ़ो देश के वीर जवानों,
सम्मुख शत्रु रहा ललकार,
जिसका दुश्मन जीवित बैठा,
उसके जीवन को धिक्कार।
करो प्रतिज्ञा तन से, मन से
नहीं मृत्यु तक हारेंगे
चीनी कब्जे से माता की
तिल-तिल भूमि उबारेंगे।

क्रान्ति गीत

न मोह भ्रम
न दुख न गम,
न रुक न थम,
बढ़ा कदम,
उठा अलम ।
अतीत हो रहा अदृश्य,
जगमगा रहा भविष्य ।
क्रान्तिदूत,
शान्तिदूत,
तपःपूत,
हे सपूत,
त्यागभूत ।
आज देख वर्तमान,
स्फूर्तिपूर्ण औ' सप्राण ।
आज सकल,
देश विकल,
भ्रान्ति विफल,
क्रान्ति सफल,
किए चल ।
हे शहीद, हे स्वतन्त्र,
फूंक-फूंक अग्निमंत्र ।
अग्निपथ,
धूम्रश्लथ,

कष्ट अकथ,
हो न विपथ,
यही शपथ ।
हे अजेय वीर अटल,
विप्लवी तरुण निकल ।

क्षेमचन्द्र सुमन

सरस्वती-पुत्रों से

उठो हिमाद्रि-शृंग से,
तुम्हें प्रजा पुकारती,
उठो प्रशस्त पंथ पर,
बढ़ो प्रवीर भारती।

जगो विराट देश के
तरुण तुम्हें निहारते,
जगो नवल तरल विमल
अरुण तुम्हें दुलारते।

बढ़ो नई जवानियाँ
सजीं कि शीश झुक गए,
बढ़ो मिली कहानियाँ
कि प्रेम-गीत रुक गए।

चलो कि आज स्वत्व का
समर तुम्हें पुकारता,
चलो कि देश का तुम्हें
सुमन सुमन निहारता।

जगो, उठो, चलो, बढ़ो,
लिये कलम कराल-सी,
चलो कि शत्रु सैन्य को,
डसें तुरन्त व्याल-सी।

उठो स्वदेश के लिए, लिये
मशाल लाल तुम !
उठो स्वदेश के लिए, लिये
विशाल भाल तुम !

रामावतार त्यागी

थाम लो सँभाल कर देश की मशाल को

हिन्द के बहादुरो
शूरवीर बालको !
थाम लो सँभालकर
देश की मशाल को

अन्धकार का गरूर
आन बान तोड़ दो
बालको भविष्य के
लिए मिसाल छोड़ दो

दो नयी-नयी दिशा
वर्तमान काल को
शूरवीर बालको !

देश माँगता कि खून
से रँगा गुलाब दो
तुम उठो सिपाहियो
चीन को जवाब दो

झूम-झूम कर मलो
युद्ध के गुलाल को
शूरवीर बालको !

दूर तक जमीन पर
शानदार जय लिखो

तुम विशाल सिन्धु पर
खून से विजय लिखो

तोड़ दो पिशाच के
तुम हरेक जाल को
शूरवीर बालको !

थाम लो संभाल कर
देश की मशाल को ।

हिमालय छीन ले

हिमालय छीन ले
मुक्त देश पर फिर विदेश से आया संकट क्षण
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !
हिमगिरि अपना राजमुकुट है प्रहरी जीवनधन
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !

वही हिमालय जहाँ कि गंगा यमुना का उद्गम,
जहाँ हमारे वीर शेरपा नहीं किसी से कम,
वहीं हमारी तपोभूमि है ऋषियों का आँगन,
हिम शिखरों पर मुक्ति देवता का है सिंहासन।
उस सिंहासन पर है अब उस की छाया
छलती रही हमें जिस की चंचल माया,
जिस के लिए चले विपरीत बहावों में
पानी भरता गया हमारी नावों में।
भाई समझा जिस को अपनाया हमने,
उसमें ही विश्वासघात पाया हमने।
और एक दिन विस्मित हो कर देखा तो
लाँघ गया वह अपनी लक्ष्मण-रेखा को।
इतने छल से हुआ न होगा कोई अतिक्रमण
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !

चन्दन-वन को ही मिलना था विषधर का दंशन
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !

सौ फूलों का नारा देने वाले को क्या ज्ञात,
हमने उस की गंध सराही और सराहा प्रात ।
हम को खुशबू भली लगी पर तोड़ा कभी न फूल,
उसके मधुवन में बस लें ऐसी की कभी न भूल ।
हम गुलाब का सौदा करते नहीं कभी,
शान्ति चाहते लेकिन डरते नहीं कभी,
वीर सिपाही उसको यह बतला देना,
भारत की सारी जनता ही है सेना !

तू जिस बलिवेदी पर रक्त चढ़ाता है,
उसका हर नदी पर्वत से नाता है,
हर बहार तेरे ऊपर न्यौछावर है,
उत्तर ही क्यों दक्षिण का भी सागर है,
तेरे पीछे खड़े हुए सब भारत जन-गण-मन ।
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !
माता ने आशीष दिए हैं बहनों ने कंगन !
सिपाही देश के
हिमालय छीन ले !

ठंडी हवा अलकनन्दा की करती आँखें लाल,
विन्ध्याचल, सतपुड़ा, अरवली आज हुए विकराल,
कभी नहीं देखा जो तूने, आज वही तू देख,
मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारे का पंथ हुआ है एक ।
फिर सह्याद्रि से उठा मराठा है,
केरल से शंकराचार्य ने डाँटा है ।
है कैलाश प्रकंपित शिव के तांडव से,
कौरव फिर लड़ने आया है पांडव से ।

धरती माता को छीना है रावण ने,
फिर आवाज लगाई युग के चारण ने।
जाग देश के प्रहरी, सीमा टूटी है,
मधुर दिशा से खट्टी गोली छूटी है!
तन-मन दोनों से ही बौना है अपना दुश्मन!
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!
चिन्ताओं ने घेरा संस्कृति का आनन्द भवन!
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!

मत उदास हो रण के इस दुर्गम पथ में,
तू कर शर-संधान, हाँकता हूँ रथ मैं!
तेरी जय आगे, पीछे उस के साधन,
गीता भी है वहीं, जहाँ है रामायण!
सेतु नहीं बँधना है, पर्वत चढ़ना है,
पवन-पुत्र को कुम्भकर्ण से लड़ना है!
हिमगिरि ज्वालागिरि होता है तो हो ले,
जो टकराये, आठ-आठ आँसू रो ले!
यहाँ पुंछे सिन्दूर, वहाँ चूड़ी टूटे,
टुकड़े कर दे जो आरोप लगे झूठे!
शस्यश्यामला भूमि नहीं है शबनम की,
चल न सकेगी यहाँ बन्दरों की धमकी!
भारत माता के हाथों में है रक्षा-बन्धन!
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!
शोणित का सागर बन जाए, हो समुद्र-मंथन!
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!

कातिल की ही तलवार उसे खा जाती है

छिपते जाते हैं सूरज चाँद सितारे सब,
आँधी बिजली के साथ गरजती जाती है,
अब अपना कफ़न बुनो खुद ओ पीकिंगवालो!
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है ।।

हैं काँप रहीं चोटियाँ पहाड़ों की थर-थर,
ओले बन बनकर शोले जलते जाते हैं,
फटते जाते हैं दुर्ग-दहाने तोपों के,
टैंकों पर इस्पाती बादल मँडराते हैं,
अँगड़ाई लेकर जाग रहा यह हिन्दोस्तान,
संगीनों पर जिन्दगी भैरवी गाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है ।।

सन सन सनमना उठा है चक्र सुदर्शन फिर
भर भर खप्पर चामुंडा जीभ पसार रही,
डम डम डम डिमिक रहा डमरू प्रलयंकर का,
हर हर हर हर हर दिशा दिशा हुंकार रही,
ऐसी चट्टान बना है अपना हर जवान,
जो गोली लगती फूलों-सी झर जाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है ।।

है खौल उठा जट्टों-मरहट्ठों का लोहू
पंजाबी शेर दहाड़ रहे मैदानों में,
हैं तड़प उठे जाँबाज़ गोरखे गढ़वाली,

है धधक उठे अंगार राजपूताने में,
ऐसा जादू भर दिया तिरंगे झंडे ने
मन्दिर के उठ कर मस्जिद तिलक लगाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है ।।

रह रह कर गंगा-जमुना में आ रही बाढ़,
नादिरशाही सिंहासन डूबा जाता है,
हो रहे सूने मंसूबे चोर-लुटेरों के,
विंध्याचल, सोया ज्वालामुखी जगाता है.
डाकुओ ! हटो, तिब्बत, लद्दाख, उपूसी में,
वरना दिल्ली की सेना पीकिंग आती है ।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है ।।

पड़ रहीं काल की भौंहों में सलवटें-शिकन
हैं खड़े हो गए तनकर लन्दन-अमरीका,
एशिया-अरब, यूरोप, अफ्रिका सब मिलकर
है लगा रहे नेहरू के माथे पर टीका,
अब भी है वक्त होश में आओ, ओ माओ !
फिर फिर हिटलर की मौत तुम्हें समझाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है ।।

वैसे तो गांधी की धरती है प्रेम-भूमि
बिन माँगे हमने सब पर प्यार लुटाया है,
पर चबा गई भी है यह चंगेज़ों को,
जब उसके घर कोई तोपें लेकर आया है,
इस बगिया में घुसने की हिम्मत मत करना
उठती जो इस पर आँख फोड़ दी जाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है ।।

गद्दारी की तुमने तिब्बत की जनता से,
कर दिए अमन के कत्ल, मधर सपने सारे,

कोरिया चीर डाला तुमने दो टुकड़ों में
कर दिए जलाकर वियतनाम में अंगारे,
मानवता के कातिलो! मगर यह याद रहे
कातिल की ही तलवार उसे खा जाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

प्रयाग नारायण त्रिपाठी

मेरे हिमालय की जय हो

मेरे हिमालय की जय हो।
विजय हो
जिसके ध्रुव मस्तक से हहराती आती ये
शत-सहस्र धाराएँ
मेरी धरती को देती रहतीं, अजस्र दान
नया अन्न, नव चिन्तन
नई स्फूर्ति, नए प्राण।

मेरे हिमालय के पार के प्रहार का
हमारा ध्रुव उत्तर भी मेरा यह हिमालय है :
चिर शान्त, चिर पवित्र, चिर अभेद्य
मन के दृढ़ निश्चय-सा
जन के संकल्प-सा।

वह भी सौम्य निश्चय था, शांत संकल्प था
जिसने उस दिन अपने वातायन खोले थे
और यारलुंग के तटवासी को
त्रिवेणी तीरवासी मेरे शीलनम्र शिल्पी ने भेंटा था
निश्छल विश्वास और कोमल आतिथ्य की भुजाओं से
और फिर दोनों ने
सह-चिन्तन की छेनी
साहचर्य के हथौड़े से
हिमगिरि के भाल पर
पाँच भव्य सपने उकेरे थे

सपने, जो जितने ही तुम्हारे थे, उतने ही मेरे थे,
उतने ही धरती के थे,
सुख के, सहजीवन के, शांति के, प्रगति के
अमन्द हिम कुन्द फूल।
उस दिन सहज विश्वासी मेरे शीलनम्र शिल्पी की
भोली भारतीय आँखों ने
तुम्हारी मुस्कान सच मानी थी
क्योंकि उस चितवन ने तुम्हें व्यक्ति नहीं माना था
तुम सन्देशवाही थे विराट उस सगे जगे नए अरुण देश के
जिसको एशिया ही नहीं विश्व की भी आशा ने निहारा था
नए युग-दर्शन के, नूतन युग-स्पन्दन के प्यार से।

उस दिन सहज शांतिकामी मेरे शिल्पी के स्निग्ध मुग्ध मन ने
तुम्हारे भाईचारे का आलिंगन सच माना था
माना था कि निश्चित वह
मार्क्स और गौतम की गरिमा से मंडित दो देशों की
पावन आत्माओं का भावन अभिनन्दन था।

कौन जानता था
वह कितनी वंचक स्मिति थी
कौन अनुमानता था
कितना विषाक्त था वह अजगर का आलिंगन।

कल ही कहा था हमने: जियो और जीने दो
आज हम विस्मित हैं, तुम आक्रान्ता हो
लेकिन न भूलो, सुनो ....
सुनो, मेरे शिल्पी की शान्त ललकार सुनो:
तुम पर विश्वास की दो आँखें बन्द होती हैं
और लक्ष-लक्ष प्राणवंत ज्वालामुखियों-सी
लक्ष-लक्ष आँखों की पलकें खुल जातीं हैं

तुम पर मान्यता के दो पाँव डगमगाते हैं
और कोटि राहों पर विचर रहे कोटि चरण
स्वाहा के स्वरों से खिचे
बलिवेदी के पथ पर आकर अड़ जाते हैं
सुनो, मेरे शिल्पी की दृप्त ललकार सुनो
जिसका निश्चल चिन्तन
आज समरांगण के सपने उकेरता
सुनो, मेरे शिल्पी की क्रुद्ध ललकार सुनो
जिसका तृतीय नेत्र
अपने हिमालय पर
एक-एक क्रूर आततायी को हेरता।

तुम नहीं झुको कहीं

हर दिशा पुकारती,
ओ सपूत भारती,
तुम नहीं रुको कहीं,
तुम नहीं झुको कहीं।

लाख मुश्किलें मिलें,
किन्तु हम नहीं हिलें,
राह के चढ़ाव से,
मौत के दबाव से।
तुम नहीं रुको कहीं,
तुम नहीं झुको कहीं।

हो नगर कि गाँव हो
धूप हो कि छाँव हो,
हर जगह चले चलो,
दीप से जले चलो।
तुम नहीं रुको कहीं,
तुम नहीं झुको कहीं।

कुछ बुरा करो नहीं,
औ' कभी डरो नहीं,
सामने पहाड़ हो,
तुम उसे उखाड़ दो।
तुम नहीं रुको कहीं,
तुम नहीं झुको कहीं।

भारत की यह माटी पावन चन्दन है

भारत की यह माटी पावन चन्दन है।
कोटि कोटिशः आज उसी का वन्दन है।
भारत की यह माटी पावन चन्दन है।

गति के गीत उपजते उसकी गोद में,
मनुज जिन्हें गाया करते है मोद में,
कल कल नदियाँ बहती हैं इस देश में,
जीवन का आदर्श लिये संदेश में।
सागर इस पर अपने रत्न लुटाता है,
अम्बर झोली भर मोती बिखराता है,
हिमगिरि इसका गौरव भाल सजाता है,
पवन पंख में नयी शक्ति भर आता है।

इसका हर उपवन जैसे वन-नन्दन है।
भारत की यह माटी पावन चन्दन है।
कोटि कोटिशः आज उसी का वन्दन है।

इसके इतिहासों के अक्षर स्वर्ण के,
राम कृष्ण के, भीम युधिष्ठिर कर्ण के,
वाणी में गौतम की गरिमा बोलती,
शौर्य-कथायें सब की आँखें खोलतीं।

बैर किसी से नहीं प्रेम ही धर्म है,
समझा हमने ही दर्शन का मर्म है,

हम अनेक में एक बने है, जी रहे,
कोटि नदों का जल सागर बन पी रहे।

कितने तन हों एक मगर स्पन्दन है।
भारत की यह माटी पावन चन्दन है।
कोटि कोटिशः आज उसी का वन्दन है।

निर्माणों से आज दिशायें है गूँजी,
एक,जूट है बुद्धि, परिश्रम औ' पूँजी।
स्वप्नों को आकार आज मिलता जाता,
मरुथल मरुथल में मधुवन है मुसकाता।

नदियों का यौवन बाँधों ने बाँध लिया,
बिजली को श्रम की बाहों ने साध लिया,
उद्योगों को नयी रवानी आयी है,
वृद्ध देश में नयी जवानी आयी है।

नव जीवन से भरा देश का कण कण है।
भारत की यह माटी पावन चन्दन है।
कोटि कोटिशः आज उसी का वन्दन है।

किसने शंकर की समाधि को तोड़ा है?
किसने नाता आज मृत्यु से जोड़ा है?
किसने घोला है विष अमृत में आकर?
क्यों जागा है आज हिमालय झुँझलाकर?

सावधान! ओ मित्र-घातियो, तुम सँभलो,
नहीं मृत्यु को गले लगाने को मचलो,
हमें चुनौती दे, कैसे बच जाओगे?
अब तो कदम कदम पर मुँह की खाओगे।

घर्षण से चन्दन बनता पावक-कण है।
भारत की यह माटी पावन चन्दन है।
घर्षण से वह आज बनी पावक कण है।
कोटि कोटिशः आज उसी का वन्दन है।

मेघराज 'मुकुल'

देश का प्रहरी

सिपाही खड़ा वह अडिग हिम शिखर पर,
उसे आज आशिष भरी भावना दो।
नदी से छलकती हँसी उसको भेजो,
लहरती फसल की उसे अर्चना दो॥

महकती कली की मधुर आस उसके
चरण में उँड़ेलो, फटेगी उदासी।
नये अंकुरों की उसे दो उमंगें,
विजयगीत की मुस्कराहट जरा-सी॥

तडित मेघ झुक कर उसे दे सहारा,
कि जिसने है मस्तक धरा का उभारा।
निशा प्रात सूरज हवा चाँद तारा,
उसे दे सहारा, निरन्तर सहारा॥

गलत मत समझना कि वह है अकेला,
करोड़ों हैं हम सब उसी एक पीछे।
उसी एक में हम अनेकों समाये,
हमीं ने उसी के प्रबल प्राण सींचे॥

जहाँ बर्फ पड़ती, हवाएँ हैं चलती,
जहाँ नित्य तूफान देते चुनौती,
जहाँ गोलियों की ही बौछार होती,
जहाँ जिन्दगी कष्ट सहकर न रोती—

वहाँ आज हिम्मत लगाती है पहरा,
वहाँ आज इज्जत विजय गीत गाये।
कहो मत वहाँ पर विवश आज कोई,
जहाँ आज प्रहरी सदा मुस्कुराये ॥

'आज़ाद रहो या मर जाओ'
अब यही हमारा नारा है

भारत का मुकुट हिमालय है, हम सब के लिए शिवालय है,
चीनियों, न लांघो यह सीमा, यह लक्ष्मण-रेख हमारी है।

है तपोभूमि मुनि-ऋषियों की,
यह तिब्बत या कोरिया नहीं,
जिसने भी इस को किया मलिन
वह शत्रु आज तक जिया नहीं।

ले अपने प्राण हथेली पर,
हम सिर पर बाँधे हुए कफन,
स्वागत के लिए उपस्थित हैं,
स्वीकार करो यह आमंत्रण।

कुछ सोच-समझ कर चरण धरो, मत आत्मघात का वरण करो,
गल कर लावा बन जाएगी, यह बर्फ नहीं, चिनगारी है।

हम जन्मजात अभिमानी हैं
मत समझो भाल झुका देंगे,
कितनी ही महँगी मिले विजय
शीशों से मोल चुका देंगे।

"मरना तो वस्त्र बदलना है":
यह हमें सिखाती गीता है,

यह देश यहाँ का हर क्षत्री
बस बरस अठारह जीता है।

इतिहास हमारा सुनो, पढ़ो, फिर तुम हिमगिरि की ओर बढ़ो,
तुम आराधक हो अजगर के, तो भारत गरुड़-पुजारी है।

तुम जन-समुद्र का ज्वार लिये,
अच्छा है, भारत पर उमड़े,
प्यासे अगस्त्य जाने कब से,
चुल्लू फैलाये हुए खड़े।

थक गए लास्य कर महादेव
अब तांडव-नृत्य रचाएँगे,
भू-गगन-रसातल-देवलोक,
हर दिशि में प्रलय मचाएँगे।

तब पाओगे तुम त्राण कहाँ, ले जाओगे निज प्राण कहाँ?
डमरू ही नहीं मात्र कर में, खाँडा भी एक दुधारी है।

पीने को मिल न सकेगा जल,
खाने को कौर नहीं देंगे,
मर जाओगे तो दफनाने को
गज भर ठौर नहीं देंगे।

माथों की भेंट चढ़ाएँगे,
फिर माँ ने हमें पुकारा है,
"आजाद रहो या मर जाओ"
अब यही हमारा नारा है।

बच्चा-बच्चा जाएगा मर, देंगे न मगर धरती कण भर,
आखिरी हमारी ही होगी, यदि पहली जीत तुम्हारी है।

महाकाल है तुंग हिमालय

महाकाल है तुंग हिमालय, भारतभूमि है काली,
देवभूमि ने शत्रु रुधिर हित लोहित जीभ निकाली,
भारत का हर बेटा भैरव बलि का है मतवाला,
वह देगा फिर मातृभूमि को शत्रु-मुण्ड की माला।
हिन्द महोदधि, बहिन सिन्धु है, विंध्य अग्नि का पर्वत,
ओ मदान्ध! होना होगा तुमको इन चरणों पर नत।

ये गोरखा, जट्ट हैं देखो, गुर्जर और बघेले
इन सबने हैं महामृत्यु के खेल सदा से खेले।
ये हैं सिख, ये वीर मराठे, ये राजपूत रुहेले
इनके घर हर दिन होते हैं बलिदानों के मेले।
चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की ओ! महान सन्तानो
ये अफीम खाने वाले इन को थोड़ा पहचानो।

सेल्यूकस से पूछो बतलाएगा वह यूनानी,
स्वयं उसने पी रखा था भारत की तलवारों का पानी।
ओ! सनयात सेन के बेटो, सँभलो, अभी समय है,
भारत से लड़ने का मतलब समझो महाप्रलय है।
जिन हृदयों पर भारत की गौरव गरिमा अंकित है,
ह्वेनसांग सिर धुनता तुम पर, फाहियान लज्जित है।

भारत का कैलास और भारत का मानसरोवर,
देवभूमि पर चढ़ आये हैं फिर देखो रजनीचर।

इन्हें बताओ गंगा की लहरें नागिन हो जातीं,
इन्हें बताओ वे दुश्मन को अनायास डस खातीं।
भ्रम था, शायद समझोगे तुम पंचशील की भाषा,
भ्रम था, शायद तुमको भी है प्रीति, शान्ति अभिलाषा

बातों के तुम नहीं देवता, वारों से तुम समझोगे,
भस्म शलभ से होगे, ज्वालाओं से यदि अरझोगे।
अर्पित रक्त, अस्थि, मज्जा है, प्राण और तन मन धन,
कोटि-कोटि आहुति के खातिर प्रस्तुत हैं ये 'जन-गन'।

रघुवीरशरण 'मित्र'

सजग जवान हैं

सावधान मानवता के दुश्मन! हम सजग जवान हैं।

तुम भारत से मत टकराओ तोप और तलवारें ले।
तुम पानी की ओर न आओ हाथों में अंगारे ले।।
हम दधीचि की अमर हड्डियाँ तप तप वज्र बनाते हैं।
पानी पर पत्थर तैराते, तन के दीप जलाते हैं।।
बेईमान इधर मत आना, पहरे पर ईमान हैं।
सावधान मानवता के दुश्मन! हम सजग जवान हैं।।

अरे विदेशी! ओ आक्रान्ता! इस सीमा से पैर हटा।
भस्मासुर! शिव की आँखों से मत अपना सम्मान घटा।।
बार बार हमने आक्रान्ता पकड़ पकड़ कर छोड़े हैं।
लाखों बार सिकन्दर जैसे दुश्मन के मुँह मोड़े हैं।।
अंधकार को डसने वाले हम उज्ज्वल दिनमान हैं।
सावधान मानवता के दुश्मन! हम सजग जवान हैं।।

द्वार खुला पर पहरे की तलवार नहीं सोने वाली।
हम हैं सब की जीत हमारी हार नहीं होने वाली।।
पैरों में धरती है सर पर सूरज लिये प्रकाश जला।
जो भी रोया उसका आँसू इन आँखों में सदा ढला।।
बलिवेदी पर चढ़ने वाले हम शोणित के दान हैं।
सावधान मानवता के दुश्मन! हम सजग जवान हैं।।

हम स्वतन्त्रता के प्रहरी हैं चोर नहीं घुसने देंगे।
बार बार होंगे शहीद हम ध्वजा नहीं झुकने देंगे।।
हम जननी के अमर पुजारी माँ का मान नहीं देंगे।
हम रावण को लक्ष्मण की रेखा की आन नहीं देंगे।।
रक्त रंगी हल्दी घाटी में हम प्रताप की शान हैं।
सावधान मानवता के दुश्मन! हम सजग जवान हैं।।

विश्व शान्ति के रक्षक हैं हम ध्वंस नहीं होने देंगे।
हम धरती को खंडहर में शव देख नहीं रोने देंगे।।
युग युग तक इतिहास न आँसू अब बरसाने पाएगा।
इस मिट्टी पर किसी गैर का कदम न आने पाएगा।।
रात हटाकर सूरज लाने वाले स्वर्ण विहान हैं।
सावधान मानवता के दुश्मन! हम सजग जवान हैं।।

हम अंगारों पर चलते हैं तूफानों में बढ़ते हैं।
समय अगर आता है तो हम भूखे प्यासे लड़ते हैं।।
सिंधु लाँघकर हमने सोने की लंका को फूंक दिया।
अस्त्रों के आगे छाती कर भारत को आज़ाद किया।।
मर कर नया जन्म लेते जो हम ऐसे इन्सान हैं।
सावधान मानवता के दुश्मन! हम सजग जवान हैं।।

बड़े बड़े दुर्गों की चोटी लोटी पैरों के नीचे।
बड़े बड़े लोहे के पुतले हमने हाथों से भींचे।।
मोर्चों पर मिटने वाले हैं मन से नहीं डरते हैं।
जो बन बीज मिटा करते हैं वे भी कहीं हरते हैं।।
तूफानों में दीपक हैं हम धरती के उत्थान हैं।
सावधान मानवता के दुश्मन! हम सजग जवान हैं।।

सच, यह देश नहीं हारेगा

पीकिंग स्थित यह एक छोटी सी बस्ती है,
जो जन रहते यहाँ, सभी की सम हस्ती है।
ये कहते हैं—"सभी राष्ट्र का, सभी बराबर,"
पर इनकी स्थिति, यही कि ये हैं मात्र कामगर।

इन सब का व्यक्तित्व कुछों में हुआ लीन है,
ये बदकिस्मत मानव होकर भी मशीन हैं।
यों तो ईश्वर ने इनको भी हृदय दिया है,
किन्तु हृदय इनका शासन ने छीन लिया है।

शासन इनका लाल, प्रेम से नहीं, रक्त से.
सचमुच ये पिछड़े हैं बढ़ते हुए वक्त से।
इनका जीवन रस सम्भवतः लगा सूखने
औ' इनकी मस्ती को है खा लिया भूख ने।

गाना, हँसना और खेलना इन्हें न आता,
दिये-जले बस्ती में सन्नाटा छा जाता।
हो जाती स्तब्ध दिशाएँ, रातें रोती,
कैसा मधुरालाप, न कोई बातें होतीं।

गा-गा कर ऋतुराज कभी ये बुला न पाए,
हँस हँस कर अपने दुर्दिन को सुला न पाए।
ईद, दिवाली की मिठास से दूर बहुत है,
जीने को जीते हैं, पर मजबूर बहुत हैं।

अर्ध निशा है, बस्ती में खामोशी छाई,
कोई भी स्वर नहीं कहीं पड़ रहा सुनाई।
किन्तु कभी दु:शान्ति भंग हो ही जाती है :
जबकि कि किसी के बूटों की आहट आती है।

फौजी सैनिक यहाँ कड़ा पहरा देते हैं,
कभी-कभी आवाज लगा थहरा देते हैं।
और घूमते रहते खुफिया इधर उधर हैं,
दबा-दबा जिन के कारण रहता हर स्वर है।

किन्तु इसी बस्ती के एक छोटे से घर में,
बदल रहा करवटें एक बालक बिस्तर में।
माँ ने कहा कि, बेटा क्यों है नींद नहीं आती,
सो भी जा, ले मैं थपकी दे तुझे सुलाती।

बालक बोला, "माँ, मत मुझको यों बहलाओ,
नींद नहीं आ पाएगी, मत तुम दुलराओ।
एक प्रश्न उलझा है, चाहो तो सुलझाओ,"
माँ ने कहा कि, बेटा, क्या है बात, बताओ।

"माँ, यह बात अभी तक मेरी समझ न आई,
अपने जो प्रधान मंत्री हैं चाउ-इन-लाई।
कल तक तो कहते थे, 'हिन्दी चीनी भाई भाई',
फिर क्यों है भारत पर की चीन ने चढ़ाई।"

झट रख हाथ पुत्र के मुख पर, माता बोली,
"इस प्रसंग को छोड़, समझ है तेरी भोली।
नहीं जानता है—जबान आगे जो खोली,
क्षण में होगी पार पुत्र सीने में गोली।

"अर्ध निशा है, औ' बाहर पहरा लगता है,
गहरी नींद पड़े सब, केवल तू जगता है।

फिर जो छेड़ा है प्रसंग मन हुआ सशंकित,
यहाँ पवन भी शासन के भय से आतंकित।

"अगर कहीं पहरेदारों ने इसे सुन लिया,
तो यह समझ मृत्यु ने हमको महज चुन लिया।
आने वाला होगा जो कल नया सवेरा,
इस घर में फैलाएगा मातमी अँधेरा।"

बालक बोला, "ऐसा क्यों ?" माँ बोली, "बेटे,
हम चीनी दुनिया में हैं किस्मत के हेठे।
यों तो है अपनी सब से ज्यादा आबादी,
किन्तु प्राप्त है नहीं हमें सच्ची आजादी।
जो शासन के दोष कभी अभिव्यक्त कर सकें,
जो विचार अपने स्वतंत्र हम व्यक्त कर सकें।"

बालक उठा, और बन्द करके खिड़की झट,
माँ से कहने लगा कि, माँ मेरी रख दे हठ।
मैं धीरे धीरे पूछूंगा, मुझे बतादे,
भारत पर आक्रमण किया क्यों, ये समझा दे।

माँ ने कहा, "छोड़ भी दे हठ, औ' चुप हो जा,
बीती आधी रात पुत्र, अब तो तू सो जा।"
"मैं हूँ माँ, लाचार, नींद है मुझे नहीं आती,"
"तो फिर पूछ," कहा माँ ने, "मैं हूं समझाती।

"पर रखना यह ध्यान कि स्वर हो काफी धीमा"।
"अच्छा माँ, जिन देशों से मिलती निज सीमा
उन में से तो नही किसी से हुआ युद्ध है,
क्यों भारत पर ही फिर चाऊ हुआ क्रुद्ध है।

"मैंने सुना कि भारत तो है शान्ति पुजारी,
उस के सत्य, अहिंसा से हिंसा है हारी।

और समझ में मेरी यह भी बात न आती,
रोज हमारी सीमा क्यों आगे बढ़ जाती।"

यह सुन माता हँसी, कहा, "यह एक राज़ है,
चाऊ की सरकार बड़ी ही चालबाज़ है।
भारत की कुछ भूमि हड़पना चाह रही है,
और पाक को भी कर गुमराह रही है।"

"होते क्यों गुमराह किन्तु माँ, पाकिस्तानी,"
माँ ने कहा कि बेटा यह उनकी नादानी।
कौन बला है चाऊ, पाक तभी जानेगा,
जबकि किसी दिन यह उस तरफ भृकुटि तानेगा।

"ओ माँ, मैंने सुना, रूस, जो अपना भ्राता,
उस की भी कुछ भूमि चीन अपनी बतलाता!"
माँ बोली, "मैं कहती हूं न दगाबाज है"
"भारत से लड़ने में माँ, बता क्या राज़ है।"

"बेटा—जब घर में धरना देदे कंगाली,
और दिखाई भरी पड़ौसी की दे थाली।
नीच न निज पड़ौस में देख सके खुशहाली,
इसी लिए है चाऊ ने बंदूक सँभाली।
सत्य बात यह—चीन मार्ग से भटक गया है,
भारत का उत्थान आँख में खटक गया है।"

कुछ आहट-सी हुई जिसे सुन माँ सहमी,
हँस कर बोला पुत्र कि, माँ तू तो है वहमी।
अच्छा, अब यह बता कौन होवेगा गारत,
कौन पराजय देखेगा, निज देश कि भारत।

माँ ने कहा कि, हार चीन को पड़े देखनी,
बोला बालक, "लेकिन, ऐसा ही क्यों जननी?"

माँ ने कहा कि, आ, तुझको भारत दिखलाऊँ,
शब्दों की तस्वीर बना कुछ दृश्य दिखाऊँ।

देख, सामने खड़ी हुई है वह जो बाला,
जाग रही जिस के नयनों में भीषण ज्वाला।
कल तक यह सधवा थी, अब विधवा का बाना
इसका पति चीनी गोली का बना निशाना।
जरा ध्यान से सुन, वह क्या नेहरू से बोली,
'लो यह मंगलसूत्र, खरीदो इसकी गोली।
और कहो सैनिक से—बदला आज चुकाये,
बरसाये गोली, अरि को यमलोक पठाये।'

गिरी आँख से बालक की दो बूंद बड़ी-सी,
माँ ने कहा कि, देख पुत्र, वह लगी झड़ी-सी।
देख त्याग की यह कैसी बेजोड़ होड़ है,
वह देता है लाख कि वह देता करोड़ है।

कंगन बढ़े, अँगूठी उतरी, बाली आई,
नन्हीं मुनियाँ भी तो देख न खाली आई।
लाई अपने खेल खिलौने मोह छोड़ कर,
औ' बालक देते पैसे गोलकें तोड़ कर।

देख, देश यह जुटा रहा है सोना, चाँदी,
"हाँ, सचमुच माँ इनको प्यारी है आजादी।"
"प्यारी नही, कहो प्राणों से ज्यादा प्यारी,
खूब जानते है यह भारत के नर नारी।

"वह सोना हीरा है, माणिक है, मोती है,
जिस सोने से मिट्टी की रक्षा होती है।
और स्वर्ण जो बन्द तिजोरी के है अन्दर,
वह है मिट्टी, धूल, धूल से भी है बदतर।

"लाल-जड़ा वह वृद्धा हार उतार रही है,
और प्रकट यों अपने कर उद्गार रही है।
'लाल हमारे सीमा पर जूझें, मिट जायें,
ये पत्थर के लाल कंठ से हम लटकायें :
क्या हम से दिल के टुकड़ों की रक्षा के हित,
ये पत्थर के टुकड़े भी होंगे न विसर्जित, ।"

"माँ देखो, वह कैसा गर्द-गुबार उठा है,"
"भारत का यौवन बेटा ललकार उठा है।
सिंहों के छौने निकले हैं निज माँदों में,
गूंज रहा है गगन उन्हीं के जयनादों में।

"ये शिव के बेटे ताण्डव करने को आकुल,
इंच इंच धरती के हित मरने को व्याकुल।
बढ़े चले आते हैं बेटा देख शान से,
मिले भूमि या मिटें, एक बस इसी आन से।"

"जोश, जवानी का यह संगम, माँ कमाल है,"
"और सामने देखा पुत्र, वह अस्पताल है।"
"देख रहा माँ, यहाँ घायलों की पंगत है,"
"हाँ, ये हैं वे वीर हुए जो क्षत विक्षत है।

"अरे देख, वह घायल बिस्तर से उठता है,
सुन कि डाक्टर से आखिर वह क्या कहता है।"
'छुट्टी दो, अब मुझे, मुझे लड़ने जाने दो'
'ठहरो कुछ दिन घावों को भर जाने तो दो।'

'ये हैं तन के घाव, शीघ्र ही भर जायेंगे,
किन्तु हृदय के घाव तो तभी भर पायेंगे।
जबकि सिंह की तरह वक्ष अरि के फाड़ूंगा,
जबकि शीश पर दुश्मन के झंडा गाड़ूंगा।

राधेश्याम 'प्रगल्भ'

मुझे मारने दो, मरने दो, जाने भी दो,
माँ के मस्तक से यह दाग मिटाने भी दो' ।"

चीखा बालक, "सच, यह देश नहीं हारेगा,
चाऊ को समझाओ, हम सबको मारेगा ।"
तभी द्वार टूटा, तत्क्षण एक फौजी अफसर,
क्रोध भरा, पिस्तौल लिये घुस आया अंदर ।

माँ बेटे को खींच तभी वह बाहर लाया,
गोली मारी, औ' दोनों को भूमि लुटाया ।
जनरल ने आकर पूछा, "कसूर क्या हुआ,
जोकि प्राण लेने इनका मजबूर तू हुआ ।"

"निज प्रधान मंत्री को भला-बुरा कहते थे,
श्रीमन, एक सत्य को यह जाहिर करते थे ।"
जनरल ने फौरन ही उसके गोली मारी,
आहत सैनिक बोला, "भूल हुई क्या भारी ?"

"भूल हुई तू सत्य, सत्य को अभी मानता,
क्या पागल तू इतना भी है नहीं जानता?
सत्य-आचरण यहाँ एक अपराध बड़ा है,
क्या चाऊ का हुक्म ध्यान से नहीं पढ़ा है ?

"करो आक्रमण, कहो कि वे हमला है करते
कब्जा करो, कहो हम सीमा-रक्षा करते ।"

मरता हुआ सिपाही बोला, "देखो जनरल
तुमने भी तो लिया सत्य का ही है सम्बल ।

"सत्य कहाँ है यहाँ सत्य का नहीं आचरण,
फिर क्यों मेरी ही किस्मत में लिखा यह मरण ?

"उचित है कि अब खुद को ही तुम गोली मारो,
उलझन में पड़ गए न ! अच्छा और विचारो ।

"एक और है सत्य मुझे तुमको बतलाना,
चाहो तो, जाकर चाऊ को भी समझाना :
हितकर यह होगा अब युद्ध-विराम करें हम,
भारत को नतशिर हो बन्धु प्रणाम करें हम ।

"क्योंकि सत्य है यह—'यह देश नहीं हारेगा'।
हुई प्रतिध्वनि—'सच, यह देश नहीं हारेगा'।

सोम ठाकुर

उड़ो उड़ो श्वेत पंख खोलकर, कपोत

तोड़ेंगे हम खूनी हाथों को,
उड़ो उड़ो श्वेत पंख खोलकर, कपोत,
नीले आसमान में ।

उड़ो उड़ो हरे भरे द्वीपों पर,
उड़ो उड़ो सतरंग पहाड़ों पर,
उड़ो उड़ो गदराई फसलों पर,
उड़ो उड़ो नहरों की धारों पर,
फाड़ेंगे हम अंधे मेघों को,
चढ़ो चढ़ो श्वेत पंख खोलकर, कपोत,
नीले आसमान में ।

ये कैसे होगा गोलार्द्धों पर,
बारूदी आग का धुँआ छाए,
ये कैसे होगा, ओ प्रियदर्शी,
ये चलता हुआ सृजन रुक जाए,
रोकेंगे हम काली आँधी को,
बढ़ो बढ़ो श्वेत पंख खोलकर, कपोत,
नीले आसमान में ।

तुम हो आजाद शाख के पंछी,
चाहे धरती घूमो या अम्बर,

राक्षस का स्वप्न भंग होगा जो
पकड़े तेरी छाया को क्षण भर,
काटेंगे हम छलिया जालों को,
उड़ो उड़ो श्वेत पंख खोलकर, कपोत,
नीले आसमान में ।

भारत की जनता की जय हो

भारत की जनता की जय हो।
जो सोते से जाग उठी है,
मतभेदों को त्याग उठी है,
बन कर भीषण आग उठी है।
काँपा शत्रु देखकर जिसको,
उसका शक्ति स्रोत अक्षय हो॥
जो तन मन धन वार रही है,
अपनी भूल सुधार रही है,
हिंसा को ललकार रही है।
झुकने को तैयार नहीं जो,
उसका रोम रोम निर्भय हो॥
जो वीरों की आन लिये है,
मातृभूमि का मान लिये है,
बलि का ध्येय महान लिये है।
मानवता थाती है जिसकी,
उस पर दीनानाथ सदय हों॥

तुम हो चीन तो हम प्राचीन

आज हिमालय की छाती पर छुपके किसने वार किया ?
अमरनाथ के पथ पर किसने रण का रथ तैयार किया ?
किसने दिल्ली को ललकारा किसने कुटिल विचार किया ?
किसने गंगा-यमुना की शीतल लहरों को ज्वार किया ?

प्रश्न यही तो उत्तर सुन
इतिहास हमारा अर्वाचीन
भूल न शब्दों की समर्थता
तुम हो चीन तो हम प्राचीन !

'सत्यमेव जयते' वाला यह राष्ट्र शांति का प्यासा है।
'पंचशील' की हरदम मन में रखता यह अभिलाषा है।
किंतु आक्रमणकारी की यदि कूटनीतिमय भाषा है।
'जंग' 'युद्ध' शब्दों की यहाँ भी तुझ-सी ही परिभाषा है।

चीन नहीं है नाम तुम्हारा
नाम 'पराई धरती छीन'
भूल न शब्दों की समर्थता
तुम हो चीन तो हम प्राचीन !

संतों के संदेश यहाँ तो वीरों के है धरोहर भी।
मीरा के हैं गीत यहाँ तो पद्मिनियों के जौहर भी।
शांति-क्रांति का देश यहाँ गोमाता है औ' नाहर भी।
राम-कृष्ण की भूमि यहाँ श्री विनोबा और जवाहर भी।

दुश्मन को घर से खदेड़ के
राष्ट्र हुआ है यह स्वाधीन
भूल न शब्दों की समर्थता
तुम हो चीन तो हम प्राचीन !

पीकिंग का पैकिंग कर लो यह अष्टग्रहों की राशि है।
जिस भूमि पर विचर रहे उस पर शंकर अविनाशी है।
शंकर प्रलयंकर त्रिपुरारि कहीं त्रिशूल उठा लेगा।
भस्म लगाने वाला है वो तुम्हें भस्म कर डालेगा।

तुम तीनों मिल कर आए
तो उसके भी आँखे हैं तीन
भूल न शब्दों की समर्थता
तुम हो चीन तो हम प्राचीन !

वतन की आबरू खतरे में है

वतन की आबरू खतरे में है, हुशियार हो जाओ !
हमारे इम्तहाँ का वक्त है, तैयार हो जाओ !
हमारी सरहदों पर खून बहता है जवानों का
हुआ जाता है दिल छलनी हिमालय की चटानों का
उठो, रुख फेर दो दुश्मन की तोपों के दहानों का
वतन की सरहदों पर आहनी दीवार हो जाओ !
वह जिनको सादगी में हमने आँखों पर बिठाया था
वह जिनको भाई कहकर हमने सीने से लगाया था,
वह जिनको गरदनों में हार बाहों का पिन्हाया था
अब उनकी गरदनों के वास्ते तलवार हो जाओ !
न हम इस वक्त हिंदू हैं, न मुस्लिम हैं, न ईसाई
अगर कुछ हैं, तो हम इस देश, इस धरती के शैदाई
इसी को जिन्दगी देंगे, इसी से जिन्दगी पायी
लहू के रंग से लिक्खा हुआ इकरार हो जाओ !
खबर रखना, कोई गद्दार साज़िश कर नहीं पाये
नजर रखना, कोई जालिम तिजोरी भर नहीं पाये
हमारी कौम पर तारीख तोहमत धर नहीं पाये,
वतन दुश्मन दरिंदों के लिए ललकार हो जाओ !

बिस्मिल इलाहाबादी

नेहरू की आवाज सारे देश की आवाज है

एक हम सब हो गए, इसमें छिपा यह राज़ है
नेहरू की आवाज सारे देश की आवाज है ।

शेरे-नर से कम नहीं, हरगिज ये भारत के सपूत
चीनियों के वास्ते बन जाएँगे ये यम के दूत ।

जंग के मैदान में, झुकना कभी सीखा नहीं
चल पड़े, तो चल पड़े, रुकना कभी सीखा नहीं ।

ये बहादुर नौजवाँ हैं, सूरमा हैं, वीर हैं
चलने में तलवार हैं, चुभने में गोया तीर हैं ।

इनसे यह चीनी कहीं भी पार पा सकते नहीं
सामने आना अगर चाहें तो आ सकते नहीं ।

देके सर करते हैं सर मैदान कितनी शान से
देश पर कुर्बान हो जाते हैं जी से, जान से ।

सब पे यह जाहिर है, रोशन है, खुला मजमून है
भीमो-अर्जुन का रवाँ इनकी रगों में खून है

ये बहादुर हैं सिपाही, इनका दम खम और है
सारी दुनिया जानती है, इनका आलम और है

गम ही क्या "बिस्मिल" को जब संसार सारा साथ है
सच है, कुंजी कामयाबी की हमारे हाथ है ।

नज़ीर बनारसी

गीत

इस वक्त ग़ज़ल की बात न कर

सन्तान हँसे तो कैसे हँसे
इस वक्त है माता ख़तरे में
संसार के परबत का राजा
है अपना हिमालय ख़तरे में
है सामना कितने ख़तरों का
है देश की सीमा ख़तरे में

ऐ दोस्त वतन से घात न कर
इस वक्त ग़ज़ल की बात न कर

मेंहदी हुई पीली कितनों की
सिन्दूर मिटे हैं कितनों के
चूड़ी हुई ठण्डी कितनों की
अरमान जले हैं कितनों के
इस चीन के ज़ालिम हाथों से
संसार फुँके हैं कितनों के

मुसकान की तू बरसात न कर
इस वक्त ग़ज़ल की बात न कर

मत काट कपट कर माता से
देना है जो ईमान से दे

यह प्रश्न वतन की लाज का है
जी खोल के दे जी जान से दे
गौरव की हिफाज़त कर अपने
दे धन भी तो प्यारे आन से दे

तू दान न कर खैरात न कर
इस वक्त ग़ज़ल की बात न कर

जिस घर में बरसता था जीवन
छाई है वहाँ पर वीरानी
बेवा हुई कितनी स्त्रियाँ
मारे गए कितने सेनानी
क्यों जोश नहीं आता तुझको
है खून रगों में या पानी

आज़ादी के दिन को रात न कर
इस वक्त ग़जल की बात न कर

सुनते हैं मुसीबत आएगी
आएगी तो देखा जाएगा
जिसने हमें कायर समझा है
उस देश से समझा जाएगा
हर शोख अदा से खेल चुके
अब खून से खेला जाएगा ।

ऐसे में मुझे बे-हात न कर
इस वक्त ग़ज़ल की बात न कर

अब बैण्ड पे गाया जाएगा
ये साज़ न छेड़े जाएँगे

ले रखदे ठिकाने से ये ग़ज़ल
मरने से बचे तो गाएँगे
है साथ हमारे सच्चाई
हम पाके विजय मुस्कायेंगे

जीती हुई बाज़ी मात न कर
इस वक्त ग़ज़ल की बात न कर

जवानों हो जाओ तैयार

बजी रणभेरी, मत करो देरी,
जवानों हो जाओ तैयार,
सुनो भारत माँ की ललकार !

आज देश की धरती तुमसे माँग रही बलिदान,
चेतावनी गगन देता है, खतरे में है शान,
पवन झकोरे लेकर आते हिम का हाहाकार,
जवानों हो जाओ तैयार !

सूर्य, चन्द्र, तारों की किरणें सहमी हुई खड़ी हैं,
ब्रह्मपुत्र, गंगा, जमुना, दुश्मन से घिरी पड़ी है,
आज हिमालय के आँगन में फूल बने अंगार,
जवानों हो जाओ तैयार !

भारत ने तो दिया विश्व को शांति का संदेश,
किन्तु विवश हो, आज सजाना पड़ा युद्ध का वेश,
महायज्ञ है, दे डालो, तन मन धन का उपहार,
जवानों हो जाओ तैयार !

जिस आज़ादी के पौधे को सदा खून से सींचा,
आज उसी की शाखाओं को अत्याचारी ने खींचा,
उठा युद्ध का दानव, लेने मानव के अधिकार,
जवानों हो जाओ तैयार !

बाँधो सर पर कफन, पहन लो अब केसरिया बाना,
आगे चलो जवानों, पीछे चलने लगे जमाना,
वीरो, सदा चुनौती करना दुश्मन की स्वीकार,
जवानों हो जाओ तैयार !

आने वाली संतानों के लिए जान पर खेलो,
नये-नये निर्माणों की रक्षा का जिम्मा ले लो,
झेलो कष्ट हजार, प्यार का नष्ट न हो शृंगार,
जवानों हो जाओ तैयार !

चीनी हमलावरों से

हिमालय लाँघकर
हमारे आँगन में कूदने वाले हमलावरो !
तुम नये नहीं हो हमारे लिए
और भी सैंकड़ों पिछली खोई सदियों में
आते रहे हैं तुम्हारी तरह
उत्तर के मैदानों की फसलों को रौदते
जलाते उन नन्हें नन्हें घरों को
जिन में बस एक मंत्र गूँजा है; शांति ! शांति!

पढ़ा होगा इतिहास, सुना होगा तुमने
कैसे हमने उनको अत्याचारों समेत
कर लिया आत्मसात्
मिटा दिया उनका अस्तित्व
लेकिन खुद जिन्दा रहे
नए सृजनों में मग्न
बुनते नित नए स्वप्न
फैली यह अमर बेल
ध्वंस की आग में भी फूलती-लहलहाती
काँटों की छाती पर थिरकती मुस्कुराती !

आए हो जिस राह
खदेड़े जाओगे तुम भी
पर इसका क्या हो तुमने
भोर की लालिमा में कालिमा लगा दी है
आस्था मिटा दी है पूरब के लोगों की

दोस्ती का फर्ज जो मर कर भी निभाते थे
तुमने तो चबा लिया है मित्रता का बढ़ा हाथ
भोले पंचशील के माथे पर थूका है
मरोड़ दी है गर्दन अमन के कबूतर की
मानववादी मार्क्स को कब्र में ठुकराया है
लेनिन के विचारों को गोली से उड़ाया है !

पर सुन लो, गाँठ बाँधो !
साम्राज्यवाद मर रहा है अपनी मौत
कैसा भी जामा पहनाओ इसे
कैसी भी दवा पिलाओ इसे
कैसे भी जिस्म में पनाह ले इसकी रूह
खूसट नहीं बचने का !

कुछ हफ्तों बाद जब
निकलेगी इसकी अर्थी
सबके मुख पर होगा—
राम नाम सत्त है
सत्त बोलो गत्त है
हमलावर मुर्दाबाद !

विमला श्रीवास्तव

रक्त सुभद्रा का बहता है, नस में बहन तुम्हारी

वीर सजनि, हे वीर भगिनि, हे वीरप्रसू, हे नारी,
उठो, जगा दो सोया जीवन, यही तुम्हारी बारी।

तुममें ही कुन्ती देवल हैं, तुम्हीं सुमित्रा, कौशल्या,
आल्हा-ऊदल की तुम माँ हो, तुम्हीं रेणुका, तुम विदुला।

रक्त सुभद्रा का बहता है,
नस में बहन तुम्हारी।
तुम ही तारा, कर्मा देवी,
लक्ष्मीबाई तुम हो।
शत्रु पक्ष से भिड़ जाने को
धीरा बाई तुम हो।
बढ़ो और जग को दिखला दो
तुम तलवार दुधारी।
दो उतार आभूषण अपने,
कवच वक्ष पर धारो,
बाँध कटारी कमर कक्ष में
सिंहिनि बन ललकारो।

दुर्गा औ' काली माँ बनकर, भड़का दो चिनगारी।

सीमा पर संकट आया है, आहुति दो धन-जन की,
पूर्ण करो कर्त्तव्य जनम का, छोड़ो माया मन की।

एक बार फिर चारण बन कवि गाये कीर्ति तुम्हारी।

प्रयाण गीत

दाँत शत्रु के खट्टे कर दें ऐसे पानीदार है,
जो रण में ज्वाला धधका दे, हम ऐसी तलवार है।

भला चाहते हो जो अपना हट जाओ मैदान से,
विष भुजंग-सा निकल चुका है, खड्ग हमारा म्यान से।

घोर काल की जिह्वा इसके वज्र सरीखे वार है,
जो रण में ज्वाला धधका दे, हम ऐसी तलवार है।।

तुमने छेड़ा ढकी राख से रणचण्डी की आग को
तुमने छेड़ा शेषनाग को, माँ दुर्गा के बाघ को।
अरे! सिंह पर महिषमर्दिनी अब हो चुकी सवार है
जो रण में ज्वाला धधका दे, हम ऐसी तलवार है।।

बजा कृष्ण का शंख, आ गया जन सागर में ज्वार है
खौल उठा है रक्त पार्थ का, नस नस जोश अपार है
जिसको सुन गिरि दिग्गज डोले हम ऐसी ललकार है
जो रण में ज्वाला धधका दे, हम ऐसी तलवार है।।

गोवर्द्धन प्रसाद 'सदय'

बोलेंगे 'जय हिन्द', हिन्द को दलित न होने देंगे

कैसा यह तूफान, धधकती महानाश की ज्वाला ?
आज गगन में घिरा मेघ क्यों वज्र गिराने वाला ?
आज हिमालय की चोटी पर किसने है ललकारा ?
उदय-शिखर से फूट रही क्यों फिर पीड़ित स्वर-धारा ?

ओ दुर्दिन के मेघ, यहाँ पर मत ऐसे टकराओ,
बलिदानों की पुण्य भूमि है, झुककर शीश नवाओ,
नहीं जानते? यहीं बहादुर शाह 'जफर' था मानी,
इस धरती के कण-कण पर है जिसकी अमर कहानी,
जिसने दानव-बल के आगे मस्तक नहीं झुकाया,
रहा वतन से दूर, कैद में, मुक्ति-गीत ही गाया।

यहीं हमारा कुँअर सिंह रिपु-दल पर टूट पड़ा था,
अपनी विमल हड्डियों तक की जला मशाल लड़ा था,
बेदम रखा, आखिरी दम तक भारत के दुश्मन को,
मुस्कानों पर झेल गया जो महाप्रलय-प्लावन को।

लक्ष्मीबाई ने भी ज्वाला का था पर्व मनाया,
देकर अपनी जान, आन का झण्डा और उठाया,
स्वतन्त्रता का जोश—युद्ध की वह पहली चिनगारी,
कौन भूल सकता है वह मर-मिटने की तैयारी ?

आज पुनः वैसी ही भीषण ज्वाला लहक उठी है,
देश-राष्ट्र की रग-रग में बिजली-सी दहक उठी है।

सागर-सी छाती में हम बड़वानल लिये अड़े हैं,
साँसों में तूफान समेटे, निर्भय आज खड़े हैं,
बर्फीली आँधी का झोंका, आता हो तो आये,
पर्वत के मानिन्द हमारे साहस से टकराये,
नहीं रुकेंगे चरण शक्ति के, नभ झुक कर पथ देगा,
अभियानों के लिए दिवाकर किरणों का रथ देगा,
बोलेंगे 'जय-हिन्द', हिन्द को दलित न होने देंगे,
पशु-बल को मर्दित करके ही साँस चैन की लेंगे ।।

शेरजंग गर्ग

जागा वतन हमारा

हर वीर आज नेफा लद्दाख में पुकारा ।
जागा वतन हमारा, जागा वतन हमारा ।।

भर आँख में शरारे अँगड़ा उठी जवानी,
खौला है आज गंगा यमुना का सर्द पानी,
हर नर बना है शंकर हर नार है भवानी,
फौलाद बन गया है हिन्दोस्तान सारा ।
जागा वतन हमारा, जागा वतन हमारा ।।

हर एक सिंह सैनिक तूफान बन गया है,
फिर दुश्मनों की खातिर चट्टान बन गया है,
हर शत्रु दो घड़ी का मेहमान बन गया है,
हर वार चौमुखा है हर खड्ग है दुधारा ।
जागा वतन हमारा, जागा वतन हमारा ।।

माँ माँगती है अपने प्यारों से आज जीवन,
माँ माँगती है अपने प्यारों से आज यौवन,
बचकर न जाय दुश्मन, बचकर न जाय दुश्मन,
दिखलाओ शत्रुओं को शमशान का नज़ारा ।
जागा वतन हमारा, जागा वतन हमारा ।।

देवराज दिनेश

राष्ट्र का मंगलमय आह्वान

ध्यान से सुने राष्ट्र संतान, राष्ट्र का मंगलमय आह्वान ।
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।
राष्ट्र पर घिरी आपदा देख, सजग हो युग के भामाशाह
दान में दे अपना सर्वस्व और पूरी कर मन की चाह
राष्ट्र की रक्षा के हित आज, खोल दो अपना कोष कुबेर
नहीं तो पछताओगे मीत, हो गई अगर तनिक भी देर
समझ कर हमें निहत्था, प्रबल शत्रु ने हम पर किया प्रहार
किन्तु अपना तो यह आदर्श, किसी का रखते नहीं उधार
हमें भी ब्याज सहित प्रत्युत्तर उनको देना है तत्काल
शीघ्र पहनानी होगी शिव को रिपु के नरमुण्डों की माल
राष्ट्र को आज चाहिए वीर, वीर भी हठी हमीर समान ।
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

राष्ट्र के कण कण में से आज उठ रही गर्वीली आवाज
वक्ष पर झेल प्रबल तूफान शत्रु पर हमें गिरानी गाज
देश की सीमाओं पर पागल कौए मचा रहे हैं शोर
अभी देगा उनको झकझोर, बली गोविन्दसिंह का बाज
किया था हमने जिससे नेह, दिया था जिसको अपना प्यार
बना वह आस्तीन का साँप, हमीं पर आज कर रहा वार
समझ हमको उन्मत्त मयूर, मगन मन देख नृत्य में लीन
किया आघात, न उसको ज्ञात, साँप हैं मोरों के आहार
राष्ट्र चाहेगा जैसा, वैसा ही हम अब देंगे बलिदान ।
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

राष्ट्र को आज चाहिए देवी कैकयी का अदम्य उत्साह
धुरी टूटे रण की, दे बाह, पराजय को दे जय की राह
राष्ट्र को आज चाहिए गीता के गायक का वह उद्घोष
मोह तज हर अर्जुन के मानस पट पर लहराये आक्रोश
आधुनिक इन्द्र कर रहा आज राष्ट्रहित इन्द्रधनुष निर्माण
यही है धर्म बने हम इन्द्र-धनुष की प्रत्यंचा के बाण
इन्द्र-धनुष रूपी प्रबल एकता की सतरंगी छवि को देख
शत्रु के माथे पर भी आज खिंच रही है चिन्ता की रेख
राष्ट्र को आज चाहिए एकलव्य से साधक निष्ठावान
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

राष्ट्र को आज चाहिए चन्द्रगुप्त की प्रबल संगठन शक्ति
राष्ट्र को आज चाहिए अपने प्रति राणा प्रताप की भक्ति
राष्ट्र को आज चाहिए रक्त, शत्रु का हो या अपना रक्त
राष्ट्र को आज चाहिए भक्त, भक्त भी भगतसिंह-से भक्त
राष्ट्र को आज चाहिए फिर बादल जैसे बालक रणधीर
राष्ट्र की सुख-समृद्धि ले आये, तोड़ रिपुकारा की प्राचीर
और बूढ़े सेनानी गोरा की वह गर्वभरी हुंकार
शत्रु के भूल जायें औसान, अगर दे मस्ती से ललकार
राष्ट्र को आज चाहिए फिर अपना अल्हड़ टीपू सुल्तान
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

आज अनजाने में ही प्रबल शत्रु ने करके वज्र प्रहार
हमारे जनमानस की चेतनता के खोल दिये हैं द्वार
राष्ट्र-हित इससे पहले, कभी न जागी थी ऐसी अनुरक्ति
संगठित होकर रिपु से आज, बात कर रही हमारी शक्ति
प्रतापी शक्तिसिंह भी देशद्रोह का जामा आज उतार
राष्ट्र की तूफानी लहरों में करता है गति का संचार
आज फिर नूतन हिन्दुस्तान लिख रहा है अपना इतिहास
राष्ट्र के पन्ने-पन्ने पर अंकित अपना अदम्य विश्वास
चन्दबरदाई के अन्तर से फूट रहे आज ज्योतिर्मय गान ।
राष्ट्रको आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

पुत्र का अनुरोध

आती नहीं नींद मुझे लोरियाँ सुहाती नहीं,
उठने मुझे दे और जग को जगाने दे,
देश के दीवाने, मरदाने ठान ठाने रहे,
मुझे वे पुराने वंश-बाने अपनाने दे,
दम्भ द्रोहियों का दम भर में मिटाने देश—
गौरव बढ़ाने मुझे वीर गति पाने दे,
मैया मुझे जाने दे चखाने मजा चीनियों को,
वीर अभिमन्यु की कहानी दुहराने दे।

आने दे स्वदेश मे लहर वीरता की 'विभु',
कहर मचाने ओष्ठ जहर लगाने दे,
गाने दे प्रलय के पुनः गीत भारत में,
नारे हों बुलन्द आसमान लों गुँजाने दे.
कर कुरबान शीघ्र प्राण फिर एक बार,
भारत वसुन्धरा को रक्त से नहाने दे.
माँ ने पिलाया पय क्षय हो पराजय की,
विजय पताका चीन बीच फहराने दे।

वासुदेव नारायण सिनहा

आज शपथ है तरुणाई की, माता-दूध शपथ है ज्वान

जय जगदम्बा, जग-अवलम्बा, अम्बा, शरण तुम्हारी आज,
गावन चाहत वीर पवांरा, अम्बा, नेक निबाहो लाज ।।
शक्ति बिना, हे आदि शक्ति, हम तैरन चाहत सिन्धु अपार,
दे कर दे कर पार जननि, अब नैया आई पड़ी मँझधार ।
वीणापाणि, वीणा तजकर, चढ़कर सिंह भरो हुंकार,
तान प्रलय की जननी, छेड़ो, गाऊँ जापर राग अंगार ।
बरसे ज्वाला आसमान से, सब कलि-कलुष भसम हो जाय
बैर-फूट की जड़ जरि जावे, जरि जा कपट-कलह-समुदाय ।
जरि दुर्बलता जा ज्वानों की, कायरता की उड़ जा राख,
जरे गरीबी भरत-भूमि की, जर जा कूटनीत की पाँख ।
लंका जरि जा रे चीनी की, शंका जरे हमारी आज,
डंका बज जा फिर भारत में बंका वीर सजे रण-साज ।
पसली-पसली तेगा बन जा, नैना रुद्र-नयन बन जाय,
बन भुजदण्डा कालदण्ड जा, जिह्वा सर्प-रूप बन जाय ।
श्वास प्रलय की झंझा बन जा, भैया भीमरूप बन जाय,
भारत सीमा के रक्षाहित सबमें मरण-ठाठ ठनि जाय ।
जाग शारदा मइहरवाली, मनिया जाग महोबे क्यार,
जाग भवानी हिंगलाज की, भर दे भुजन वज्र के सार ।
करी चढ़ाई है 'चाऊ' ने, सीमा-भूमि दबाई आय,
दयी चुनौती है ज्वानों को, रणका बीड़ा दिया पठाय ।
चढ़ ललकारा है पौरुष को, वीरो, वेग सजग ह्वै जाय,
बड़ी हँसाई जग में ह्वैहें, जो ना पान चबैहों जाय ।
युगन-युगन लों चरचा चलि है चलिहौं कोटि कल्प यह राय
कायर मरद रहे भारत के, चीनी सीमा लियो दबाय ।

वीर्य बखानूँ मैं पोरस का, लोहा लिया अकेले जाय,
मान मिटाया यूनानी का, भारत-गौरव लिया बचाय ।
धन्य वीरता चन्द्रगुप्त की, सेल्यूकस को दिया पछार,
बिटिया ब्याही यूनानी की, छाती-बीच जड़ी तलवार ।
तेज बखानूँ लोकमान्य का, साका चन्द्रशेखर सरदार,
तप:साधना मालवीय की, जौहर वीर जवाहर क्यार ।
आज अखाड़े कौ चलना है, सज जा वीर केसरिया ज्वान,
उड़े तिरंगा आसमान कौ, उड़ जा वेग जेट सुविमान ।
भाला तरज उठे राणा का, लक्ष्मीबाई की तलवार,
चले भवानी वीर शिवा की, वेधी बान पिथौरा क्यार ।
काह हिमाकत है चीनी की, जो सीमा को लेन दबाय,
पैर काट लेता 'चाओ' के जो वे कदम बढ़ैते आय ।
बात न बिगड़ी अब भी वीरो, अब भी चढ़ा धनुष पर बाण,
लक्ष्य साध कर वीरो टूटो, मारो वैरी को बलवान ।
छूटो वीरो, बान वेग से, पहुँचौ बाज-तुल्य लद्दाख,
काहे अफीमची चीनी चिड़िया, ल्हासा पहुँच मरोड़ौ पाँख
आज शपथ है तरुणाई की, माता-दूध शपथ है ज्वान,
मार भगाओ चीनी दल को झण्डा गाड़ देहु मैदान ।

रामविलास शर्मा

हिमालय का आह्वान

हिमालय की शुभ्र नीलम वादियों में भटकती
बारूद की दुर्गन्ध से बोझिल हवायें,
अग्नि गोलों के प्रबल आघात सहते
बर्फ आच्छादित, धवल, उत्तुंग शिखरों के—
दरकते वज्र-सीने

गोलियों की निरंतर बौछार में आहत
प्रलम्बित बाहु धारी
देवदार, चिनार, चीड़ के सघन वन
टेरते हैं आज हमको
क्योंकि फिर से
स्वार्थ लोलुप, विश्व शान्ति का हनेता
प्रबल आक्रांता पड़ौसी चीन
सह-अस्तित्व के सिद्धान्त की होली जला
अपनी हथेली तपाने को व्यग्र
बिसरा पंचशीला प्रतिज्ञायें
और धर कर ताक में भ्रातृत्व
लाँघकर इंसानियत की हदें
देखो दे रहा है द्वार पर दस्तक
हमारे अडिग प्रहरी हिमगिरि के द्वार पर दस्तक
——

विश्व के न्यायालयों में
हकों की जिसके हिमायत की सदा हमने

उसी ने हमारे हक
हमारी धरती निगलने को
उलट कर फन उठाया है
किन्तु इतना याद रखे
हम दधीचि हैं
मनुजता के शत्रुओं का पूर्णतः संहार करने को
हमारी हड्डियों से वज्र बनते हैं
जरूरत के वक्त
हमारे बाजुओं ने 'द्रोण' 'गोवर्धन' उठाये हैं
हमारे दृढ़ चरण ने लाँघ डाले हैं महासागर
अपने जब बेगाने हो गये आँखें बदल करके
उसी क्षण हमने
कुरुक्षेत्र में रचे भीषण महाभारत
और अब फिर
शत्रु की ललकार के स्वर घुल रहे हैं फिज़ाओं में
इसलिए वक्त का है यह तकाज़ा
छोड़ अपने सैद्धान्तिक मत-भेद
बिसरा द्वेष, ईर्ष्या, वैमनस्य
हम आज हिल-मिल एक हो जायें

हमारे शौर्य का तेजम्
हमारी दृढ़ लगन की दीप्ति
हिलोरते उत्साह की आभा
उगा दें उत्तरी क्षितिजे सहस्त्रों प्रखर ज्योतिर्पुंज
कि आक्रांता तमस् की तरह
उल्टे पाँव अपनी सरहदों में जा शरण खोजे
और फहरायें
"मैकमैहोन" रेख की शीर्षस्थ चोटी पर
तिरंगा ध्वज

शान्ति का उद्घोष करता
मनुजता, सच्चाई की जय दुन्दुभि का घोष करता !

गीता रख कर आज

अंतिम बार समर के पहले, अपना हृदय टटोल रहा हूं
गीता रख कर आज महाभारत के पन्ने खोल रहा हूँ !

साक्षी है इतिहास शांति तज हमने कभी न रण अपनाया,
"युद्धं देहि", गुहार लगाता अतिथि हमारे द्वारे आया,
साक्षी है इतिहास अतिथि को हमने सर्वोपरि माना है,
तन-मन-धन से किया समादर खाली हाथ नहीं लौटाया !

जितना माँगो युद्ध मिलेगा अटल रहे आदर्श हमारा,
मैं चालीस कोटि जनता का प्रतिनिधि तुम से बोल रहा हूँ !

शस्य-श्यामला मातृभूमि की डालों में तलवार फलेगी,
गंगा की उच्छल धारा में प्रखर रुधिर की धार चलेगी,
नयनों के नीलम सपने प्राणों में बन तूफान पलेंगे,
मरण-पर्व है आज लेखनी भी बन कर करवाल चलेगी !

झेल नहीं पाओगे, मेरा वेग नहीं सम्हलेगा तुमसे
टूट पड़ूंगा वैनतेय-सा मैं अपने पर तौल रहा हूँ !

सर्वनाश की ज्वाला धधके, धुआँ उठे, दहके अंगारे,
बिजली गिरे, दरक जाए भू, टूट पड़े धरती पर तारे,
पर्वत चूर-चूर हो जाएं, सिंधु उछल कर नभ को छू ले,
महानाश पागल बन डोले अपनी लम्बी जीभ पसारे !

मैं अक्षत, अक्षय, अक्षर हूँ, तू जी भर विष-वमन किए जा,
कालिय-सा नाथूँगा तुझको मैं प्रति फण पर डोल रहा हूँ !

अंतिम बार समर के पहले, अपना हृदय टटोल रहा हूं,
गीता रख कर आज महाभारत के पन्ने खोल रहा हूँ !

पुकारता नगाधिराज

नगाधिराज के शिखर पुकारते, बढ़े चलो
अजेय वीर वेश को सँवारते बढ़े चलो

अजर अमर जवानियों,
उफान की निशानियों,

बहा अपार रक्त-नद,
हरो समस्त शत्रु-मद,

चढ़ा कपाल-मालिका,
करो प्रतुष्ट कालिका,

विपत्तिग्रस्त देश को उबारते बढ़े चलो
नगाधिराज के शिखर पुकारते, बढ़े चलो

अमोघ अस्त्र साज लो,
विजय बुला रही, चलो,

कृशानु तेजवान हो,
अलंघ्य हो, महान हो,

निहारती तुम्हें धरा,
लिये समीर की त्वरा

यशस्विनी परम्परा सुधारते बढ़े चलो
नगाधिराज के शिखर पुकारते, बढ़े चलो

तुम्हीं असंख्य सर्जना,
तुम्हीं विनाश गर्जना,

अगम्य सिन्धु उच्छलन,
अदम्य हो प्रलय-तपन

विराट व्योमकेश हो
अनंत हो, महेश हो,

असीम आत्मशक्ति को विचारते बढ़े चलो
नगाधिराज के शिखर पुकारते, बढ़े चलो

विपक्ष की विकट घटा
तड़ित् प्रहार से हटा,
बलिप्रदान की घड़ी,
अमर्त्य-गान की घड़ी,

सुयोग भाग्य से मिला,
प्रसून प्राण का खिला,

सहर्ष आज मातृ-ऋण उतारते बढ़े चलो
नगाधिराज के शिखर पुकारते, बढ़े चलो।

रमेश नारायण तिवारी

अरे ओ रक्त-लोलुप

अरे ओ रक्त-लोलुप,
तुम चले हो रक्त पीने को
तो बोलो क्या कहूँ तुमसे
कि तुमने रंग देखा है
कि तुमने मर्द का मचला लहू
देखा नहीं है ।

कि तुमने रंग देखा है
कि तुमने हिन्द का उबला लहू
देखा नहीं है ।

अरे ओ रक्त-लोलुप,
हम समझते हैं कि तुम क्या हो !
कि तुम, जो लाल-सा रंगीन टुकड़ा
टाँग कर छत पर
श्रमिक के खूँ-पसीने का
बड़ा आदर दिखाते हो
मगर तुम जो कि खंजर से—
—कि जो कुछ बच रहा ऐसा—
उसी मजदूर के तन का
बचा लोहू बहाते हो ।
बड़े हमदर्द बनते हो
किसानों के, मगर उनको

जमीं में गाड़ कर जिन्दा
उन्हीं के खेत में घुस कर
सुनहली बाल गेहूँ धान की
ओ लूटनेवाले !
वहशियो ! क्या कहूँ तुमसे---
यहाँ की है जमीं सर-सब्ज
इसकी एक है खूबी
शहादत का लहू बहता रहा है
इसकी रग-रग में
वतन से प्यार करता है
यहाँ हर पेड़ औ' पंछी
यहाँ का बाल-बच्चा
या कि औरत हो, कि बूढ़ा हो
वतन पर जान देता है
किसानों को बहुत है प्यार खेतों से
कि उनके हैं।
मजदूरों को लगन है काम की
यह देश उनका है
कि मेहनत जो करें उनको
यहाँ सब कुछ मयस्सर है
है ऐसा देश जिस पर तुम चले हो
मारने डाका
दिला दूँ याद तुमको मैं मगर
ओ चीन के आका
चले तो हो, समझ लेना
न है यह चीन, है भारत
जहाँ दुश्मन की सूरत ले के
जो आया हुआ गारत